सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक: 26 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 27 फरवरी, 2026
मूल्य ₹ 3/-

अगर आप तेजी से चलना चाहते हैं तो अकेले चलिए। लेकिन अगर आप दूर तक चलना चाहते हैं तो साथ मिलकर चलिए।

-रतन टाटा

भारत की सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदे... 7 | एनसीपी के मर्जर पर लगा ग्रहण... 3 | शंकराचार्य का अपमान देखने पर... 2

केजरीवाल बरी, सत्ता की साजिश बेनकाब

फैसले के बाद भावुक केजरीवाल ने कहा सत्यमेव जयते

» घोटाले का आरोप लगा कर बीजेपी ने किया चरित्र हनन, डाल दिया जेल में छीन ली सत्ता

» 21 अन्य आरोपी भी किए गए बरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को बड़ी राहत देते हुए की अदालत ने दोनों नेताओं को कथित शराब नीति घोटाला मामले में आज बरी करते हुए केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के आरोपपत्र पर संज्ञान लेने से इनकार कर दिया। इसके अलावा इस मामले में 21 अन्य आरोपियों को भी बरी कर दिया गया है। राउज एवेन्यू कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा? कि बिना सबूत के आरोप साबित नहीं होता है। इस मामले में सीबीआई ने कुल 23 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की थी। कोर्ट ने सभी के खिलाफ आरोप तय करने से इनकार करते हुए सभी को बरी कर दिया।

वहीं देश के चर्चित राजनीतिक चेहरों में शामिल दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल और उनके सबसे भरोसेमंद सहयोगी पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को जिस कथित शराब घोटाले के आरोपों में गिरफ्तार किया गया वह सिर्फ एक कानूनी मामला नहीं था। वह एक राजनीतिक तूफान था। आरोपों की गूंज इतनी तेज थी कि उसने अदालत से पहले ही सड़कों टीवी स्टूडियो और सोशल मीडिया पर फैसला सुना दिया था। उन्हें भ्रष्ट कहा गया बेईमान कहा गया सत्ता का दुरुपयोग करने वाला बताया गया। उनके चरित्र को इस तरह चौराहे पर खड़ा किया गया जैसे फैसला हो चुका हो और सजा तय हो चुकी हो। लेकिन लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि अंतिम फैसला अदालत देती है सत्ता नहीं। और जब दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट ने इन आरोपों पर तल्ख टिप्पणी करते हुए दोनों नेताओं को बरी कर दिया तो यह सिर्फ एक कानूनी राहत नहीं यह उस नैरेटिव पर सीधा प्रहार था जिसे महीनों तक देश के सामने सच की तरह परोसा गया। यह फैसला उन सवालों को भी जन्म देता है जिनसे सत्ता अक्सर बचना चाहती है। अगर आरोप टिके नहीं तो गिरफ्तारी क्यों हुई? अगर सबूत पर्याप्त नहीं थे तो जेल क्यों भेजा गया? अगर केस इतना मजबूत था तो अदालत ने आरोपों को खारिज क्यों किया?

अदालत ने लगाई जांच एजेंसियों को कड़ी फटकार

विशेष न्यायाधीश जितेंद्र सिंह ने जांच में हुई चूक के लिए संघीय जांच एजेंसी को फटकार लगाते हुए कहा कि केजरीवाल के खिलाफ कोई ठोस सबूत नहीं थे। जबकि सिसोदिया के खिलाफ प्रथम दृष्टया कोई मामला ही नहीं बनता था। न्यायाधीश सिंह ने कहा कि आरोपपत्र में आंतरिक विरोधाभास हैं जो साजिश की थ्योरी की जड़ पर प्रहार करते हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी सबूत के अभाव में केजरीवाल के खिलाफ लगाए गए आरोप टिक नहीं सकते और पूर्व मुख्यमंत्री को बिना किसी ठोस सबूत के फंसाया गया है। न्यायाधीश ने कहा कि यह कानून के शासन के प्रतिकूल था। सिसोदिया के संबंध में न्यायाधीश ने कहा कि रिकॉर्ड में ऐसा कोई सबूत नहीं है जो उनकी संलिप्तता को दर्शाता हो और न ही उनसे कोई बरामदगी की गई है।

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को अदालत ने कथित शराब घोटाले में बइज्जत बरी किया

बीजेपी की खतरनाक प्रवृत्ति की कहानी है

यह सिर्फ दो नेताओं की कहानी नहीं है। यह उस खतरनाक प्रवृत्ति की कहानी है जिसमें आरोप पहले लगाए जाते हैं और सबूत बाद में खोजे जाते हैं। यह उस दौर की कहानी है जिसमें किसी व्यक्ति को अदालत से पहले ही दोषी घोषित कर दिया जाता है। और जब अदालत उस व्यक्ति को बरी करती है तो सवाल सिर्फ कानून पर नहीं बल्कि उन ताकतों पर उठता है जिन्होंने आरोपों का महल खड़ा किया था।

राजनीतिक चमत्कार था आम आदमी पार्टी का उदय

दिल्ली की राजनीति में आम आदमी पार्टी का उदय एक राजनीतिक चमत्कार की तरह था। भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन से निकली इस पार्टी ने देश की राजधानी में सत्ता हासिल की और खुद को ईमानदारी की राजनीति का प्रतीक बताया। लेकिन यही पहचान जल्द ही उसके खिलाफ सबसे बड़ा हथियार बन गई। जब कथित शराब नीति घोटाले का आरोप आम आदमी पार्टी पर लगाया गया। जांच एजेंसियों ने इसे बड़े भ्रष्टाचार के रूप में पेश किया। छापे पड़े पूछताछ हुई और आखिरकार गिरफ्तारी भी हुई। भारतीय जनता पार्टी ने इसे भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा उदाहरण बताते हुए लगातार हमला बोला।

अब नया कानून लाए केंद्र सरकार तय हो जिम्मेदारी : वकार

एआईएमआईएम नेता असीम वकार ने अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया को सत्य की जीत की बधाई देते हुए संसद में क्रिमिनल अकाउंटेबिलिटी लॉ बनाए जाने की मांग उठाने की अपील की है। हम पूरे विपक्ष से आग्रह करते हैं कि निर्दोष लोगों को जेल भेजने वालों के खिलाफ सख्त कानून बनाया जाए। अगर वह कभी संसद पहुंचे तो उनकी पहली मांग सरकार से यही होगी कि जो लोग बेगुनाहों को फंसाते हैं, उन्हें नौकरी से निलंबित कर जेल भेजा जाए। उन्होंने आरोप लगाया कि शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद के खिलाफ भी साजिश रची जा रही है और अंततः वे भी निर्दोष साबित होकर बरी होंगे। झूठे आरोपों के कारण न जाने कितने लोगों की जिंदगियां और करियर बर्बाद हुए हैं, और यदि अभी कानून नहीं बनाया गया तो यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

सत्यमेव जयते

कोर्ट का फैसला आने के बाद दिल्ली के पूर्व सीएम केजरीवाल मीडिया के सामने मुखातिब हुए। इस दौरान वह इतने भावुक थे कि कैमरे के सामने ही वह फूट-फूटकर रोने लगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि लंबे समय से उन पर शराब घोटाला कहकर जो आरोप लगाए जा रहे थे उन्हें अदालत ने पूरी तरह खारिज कर दिया है। केजरीवाल ने कहा कि वे शुरू से ही यह कहते रहे हैं कि सच की जीत होती है और आज वही साबित हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि भगवान उनके साथ हैं और न्याय मिला है। अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया कि आखिर में अधर्म और अन्याय हारता है और सच ही जीतता है। सत्यमेव जयते। अरविंद केजरीवाल की रिहाई के बाद पत्नी सुनीता केजरीवाल ने मीडिया से बातचीत में कहा दुनिया में कोई कितना भी शक्तिवान हो जाए लेकिन ईश्वर की शक्ति के ऊपर नहीं हो सकता है। अरविंद केजरीवाल ने अपना पूरा जीवन पूरी ईमानदारी से जिया है। उनका एक ही लक्ष्य है कि भारत खूब तरक्की करे।

आरोप कभी इतना बड़ा नहीं हो सकता वो सच को आच्छादित कर ले : अखिलेश यादव

अखिलेश ने भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा है। कन्नौज सांसद ने फैसले को शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती से जोड़ते हुए बड़ा दावा किया। उन्होंने लिखा कि आज दिल्ली के लोकप्रिय पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल के साथ सत्य और न्याय दोनों खड़े हैं, आरोप कभी इतना बड़ा नहीं हो सकता कि वो सच को आच्छादित कर ले। आज हर ईमानदार आशा भरी साँस लेगा और भाजपा के समर्थक शर्म के मारे घोर आत्म-लज्जित हो रहे होंगे। आजादी से पहले, वर्तमान सत्ता के जो 'संगी-साथी' देश के दुश्मनों से मिले हुए थे और स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी के फंदों तक पहुँचाने के लिए, आज़ादी के दीवानों के खिलाफ़ मुखबिरी जिनका काम रहा है और जो देश को गुलाम बनानेवाले साम्राज्यवादियों के माफ़ी-वज़ीफ़े पर रहकर अपनी भूमिगत भूमिका निभाते रहे हैं, छल-छलावे के वो विचारवंशी भाजपाई, आज किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं बचे हैं।

हाईकोर्ट जाएगी सीबीआई

सीबीआई ने एलान किया है कि वह निचली अदालत के फैसले के खिलाफ दिल्ली हाईकोर्ट जाएगी। एजेंसी का मानना है कि इस मामले में पेश किए गए कई पुख्ता सबूतों और जांच के पहलुओं को फैसले में उचित स्थान नहीं मिला है जिसके चलते अब ऊपरी अदालत से हस्तक्षेप की मांग की गई है। सीबीआई ने ट्रायल कोर्ट के फैसले के खिलाफ तुरंत हाईकोर्ट में अपील करने का फैसला किया है। एजेंसी का मानना है कि मामले जांच के कई पहलुओं को या तो नजरअंदाज किया गया है या उन पर ठीक से विचार नहीं किया गया है।

शंकराचार्य का अपमान देखने पर भी पड़ेगा महापाप

» सपा प्रमुख अखिलेश यादव बोले- शंकराचार्य भी पीडीए का हिस्सा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा पर करारा प्रहार किया है। समाजवादी पार्टी मुखिया अखिलेश यादव ने शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती पर लगे आरोपों पर भड़के। कन्नौज सांसद ने शंकराचार्य को पीडीए बताया है। उत्तर प्रदेश सरकार में उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के बयान का जिक्र करते हुए अखिलेश ने राज्य सरकार को भी घेरा है।

अखिलेश ने पूछा कि शंकराचार्य का अपमान कैसे हो रहा है? हमारे धर्म के सबसे बड़े वह शंकराचार्य हैं. उनका जब अपमान हुआ तो डिप्टी सीएम कहते हैं महापाप पड़ेगा और जो देख रहे थे शंकराचार्य को और अपमान होते हुए देख रहे थे क्या उन पे महापाप नहीं पड़ेगा? अखिलेश यादव ने कहा कि अगर इनको दुख है और उनको दुख था तो मैं तो एक ही सुझाव दे सकता हूं जापान से आने में बड़ा वक्त लगेगा इस्तीफा दो 100 विधायकों का ऑफर समाजवादियों की तरफ से नया मुख्यमंत्री बनाओ नए तरीके से काम करो।

चुनावी वर्ष में ब्राह्मण कार्ड के सवाल पर सपा मुखिया ने कहा कि पीडीए कार्ड देखिए शंकराचार्य पीड़ित हैं, दुखी हैं, अपमानित हैं. अब बताओ हम लोग उनके साथ खड़े हैं कि नहीं खड़े हैं।

अखिलेश इस बयान के जरिए राज्य में बड़ा सियासी संदेश देने की कोशिश की है. अक्सर यह सवाल उठते हैं कि सपा के पीडीए में ब्राह्मण और हिन्दू नहीं हैं. अब इस बयान के माध्यम से अखिलेश, बीजेपी की हिन्दुत्व की राजनीति को कमजोर कर मतदाताओं को अपने पक्ष में आकर्षित करने की कोशिश कर रहे हैं।

भाजपा आवाज उठाने वालों को धमकाती है

इसके पहले सपा चीफ ने शंकराचार्य के मामले पर सोशल मीडिया साइट एक्स पर एक पोस्ट में कहा था- सच्चे संतों का अपमान करके भाजपा ने फिर साबित कर दिया है कि सिवाय अपनी पैसों की भूख और खुदगर्जी , वो किसी की भी सगी नहीं है। भाजपाई की ये पुरानी 'कु-कार्यशैली' है कि जो भी भाजपाइयों के जुल्म, ज्यादती और जुर्म के खिलाफ़ आवाज़ उठाता है, उसे भाजपाई झूठे आरोपों से धमकाने, दबाने, मिटाने की साजिश करते हैं।

भ्रष्ट-भाजपाई का मंसूबा बस धन-कमाना

अखिलेश ने लिखा था कि भ्रष्ट-भाजपाई, उनके मुखबिर संगी-साथी और सत्ता सजातीय वाहिनी की 'बिगड़ी-तिकड़ी' नकारात्मकता का आपराधिक त्रिगुट है, जिसका मंसूबा धन-कमाने के लिए सत्ता हासिल करना है. ये सब के सब अपने-अपने स्वार्थ के लिए एक अड्डे पर इकट्ठा हैं वैसे ये एक-दूसरे को फूटी आँख नहीं सुहाते हैं. इनकी आपसी खटपट की भूमिगत आवाज़ें अक्सर बाहर सुनाई दे जाती हैं.

जो बच्चा हमारे पास कभी आया ही नहीं उसके साथ नाम जोड़ना सरल नहीं: अविमुक्तेश्वरानंद

अग्रिम जमानत पर सुनवाई से पहले बोले शंकराचार्य

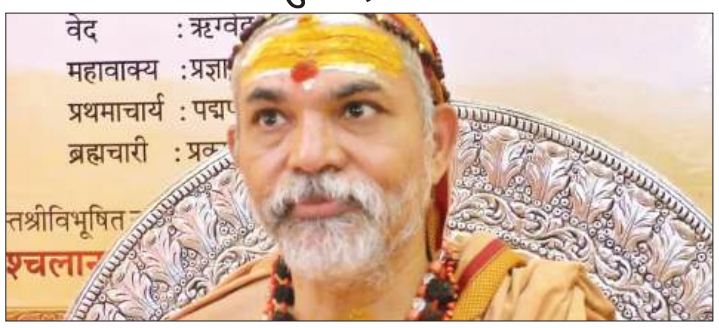

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

प्रयागराज। शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद नाबालिग से यौन शोषण के मामले की वजह से चर्चा में है। इस मामले में अग्रिम जमानत के लिए शुक्रवार (27 फरवरी) को सुनवाई है। इससे पहले शंकराचार्य ने बड़ा बयान दे दिया है। उन्होंने कहा कि जो बच्चा हमारे पास कभी आया ही नहीं, उसके साथ हमारे नाम को जोड़ना सरल नहीं है।

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने आगे कहा कि बच्चा उन्हीं के साथ क्यों है? बच्चे उसी के कब्जे में क्यों हैं? उन्होंने आगे कहा कि नाबालिग बच्चे उसी की कस्टडी में क्यों बने हुए हैं? उन्होंने यूपी पुलिस पर सवाल उठाते हुए कहा कि यूपी पुलिस उसे क्यों मौका दे रही है? इसी से समझ में आता है कि यूपी पुलिस उसे संरक्षण दे रही है।

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा कि जनता कभी झूठ नही बोलती , सब सच जानते हैं. शंकराचार्य ने कहा कि हमारे लिए हर दिन महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि पुलिस ने अभी तक बच्चे को जुबेनाइल बोर्ड में क्यों नही भेजा? प्रदेश की पुलिस उस दुराचारी अपराधी को संरक्षण दे रही है. यदि उस दुराचारी के लैपटॉप में कोई चलचित्र है, फोटो है तो उसे सार्वजनिक क्यों नही करता.।

भाजपा सरकार किसी की सगी नहीं: संजय सिंह

» आप सांसद बोले- शंकराचार्य के खिलाफ दमन की कार्यवाही हुई तो पार्टी करेगी संघर्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आम आदमी पार्टी (आप) सांसद संजय सिंह ने शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती मामले में कहा है कि भाजपा किसी की सगी नहीं है। यह अपने हितों के लिए शंकराचार्य को भी टारगेट कर रहे हैं। शंकराचार्य पर जो कार्रवाई हो रही है वह एक सोची समझी साजिश है। अगर शंकराचार्य के खिलाफ दमनात्मक कार्यवाही की गई तो पार्टी इस मामले को सड़क से संसद तक संघर्ष करेगी।

आप सांसद व प्रदेश प्रभारी संजय सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार ने बजट में आंकड़ों की बाजीगरी की है। निर्धारित बजट घटाकर फिर उसमें बढ़ोत्तरी दिखाना जनता के साथ विश्वासघात है। वहीं बसपा विधायक उमाशंकर के ठिकानों पर पड़े छापों पर उन्होंने कहा कि जब मेरे ऊपर छापे पड़े थे, तब उमाशंकर भाजपा के पक्ष में बयान दे रहे थे। किंतु मैं ऐसा मानता हूं कि किसी के खिलाफ राजनीतिक विद्वेष के कारण कार्रवाई नहीं होनी चाहिए।

अगर उमाशंकर सिंह ने कुछ गलत नहीं किया है तो उनके साथ न्याय होना चाहिए। यूजीसी बिल को संजय सिंह ने यह समाज को जातीय आधार पर बांटने की साजिश बताया। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश के सैकड़ों स्कूलों में फिजिक्स, केमिस्ट्री और बायोलॉजी की लैब नहीं हैं।

जिला पंचायत चुनाव सीधे जनता से कराएं

संजय सिंह ने जिला पंचायत चुनाव को लेकर मांग की कि ब्लॉक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष का चुनाव सीधे जनता से कराया जाए। ताकि बीडीसी और सदस्यों की खरीद-फरोख्त पर रोक लगे। उन्होंने बताया कि पार्टी 4 से 9 अप्रैल तक आगरा से मथुरा तक 'रोजगार-सामाजिक न्याय दो यात्रा' का चौथा चरण निकालेगी। ब्रज प्रांत में होने वाली यात्रा में जनता को बजट की सच्चाई और रोजगार के मुद्दे पर जागरूक किया जाएगा।

मुझे दाढ़ी वालों से बहुत डर लगता है : जगदीप धनखड़

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अपने गृह राज्य राजस्थान के चुरू जिले में पहुंचे। यहां वह पूर्व सांसद राम सिंह कसवा और विधायक रहीं कमला कसवा से मिलने उनके घर गए. दरवाजे पर ही उनका स्वागत किया गया। इस दौरान उन्होंने गांव के ही एक शख्स से मजाकिया लहजे में कहा कि अच्छा हुआ अपने दाढ़ी नहीं रखी है।

जगदीप धनखड़ ने कहा कि दाढ़ी वालों को देखते ही मैं डर जाता हूं। मेरा ओएसडी भी अपनी दाढ़ी से मुझे डराता है। हालांकि यह बात वह हंसते हुए मजाकिया अंदाज में कह रहे थे। पूर्व उपराष्ट्रपति का दाढ़ी वाला ये बयान अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। लोग इसे लेकर तरह-तरह के कमेंट कर रहे हैं। धनखड़ के दाढ़ी वाले बयान को लेकर सियासी गलियारों में भी खूब चर्चा हो रही है. कोई इसे सामान्य बात बता रहा है तो किसी का कहना है कि इसके जरिए उन्होंने दाढ़ी रखने वाले एक वर्ग विशेष को टारगेट करने का काम किया है। विपक्ष के कुछ लोगों ने सोशल मीडिया पर लिखा है कि पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने अपनी पार्टी के उन बड़े नेताओं पर निशाना साधने की कोशिश की है, जो दाढ़ी रखे हुए होते हैं।

राज्यसभा चुनाव न सिर्फ लड़ेंगे बल्कि जीतेंगे भी: तेजस्वी यादव

» 5 राज्यसभा सीटों के लिए नामांकन की प्रक्रिया शुरू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार की 5 राज्यसभा सीटों के लिए नामांकन की प्रक्रि या शुरू होते ही राज्य की राजनीति गरमा गई है। एनडीए और महागठबंधन, दोनों ही खेमों में बैठकों का दौर जारी है। इस बीच, राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव पूरी तरह एक्शन मोड में दिख रहे हैं।

तेजस्वी यादव ने विधानसभा में अपने विधायकों और गठबंधन के साथियों के साथ बैठक की। उन्होंने आत्मविश्वास के साथ कहा कि महागठबंधन के पास पर्याप्त संख्याबल है और वे राज्यसभा चुनाव न सिर्फ लड़ेंगे, बल्कि जीतेंगे भी। उन्होंने संकेत दिया कि अगले कुछ दिनों में उम्मीदवारों के नाम तय कर लिए जाएंगे। उनके इस बयान के बाद बिहार की राजनीति में एक बार फिर किसी खेला की चर्चा तेज हो गई है। राज्यसभा की एक सीट जीतने के लिए जरूरी आंकड़ों को देखें, तो महागठबंधन (आरजेडी, कांग्रेस, वाम दल और आईआईपी) के पास कुल 35 विधायक हैं। जीत पक्की करने के लिए तेजस्वी को अभी भी 6 अतिरिक्त विधायकों के समर्थन की जरूरत होगी। ऐसे में सबकी नजरें ओवैसी की पार्टी और बसपा के रुख पर टिकी हैं। दूसरी ओर, मौजूदा समीकरण के हिसाब से एनडीए को भी अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए 3 अतिरिक्त वोटों की जरूरत पड़ सकती है।

अगर 5 सीटों के लिए केवल 5 ही उम्मीदवार मैदान में उतरते हैं, तो चुनाव निर्विरोध संपन्न हो जाएगा। लेकिन यदि कोई छठा या सातवां उम्मीदवार मैदान में आता है, तो मतदान होना तय है। ऐसी स्थिति में क्रॉस वोटिंग का खतरा भी बढ़ सकता है। आने वाले कुछ दिन बिहार की सत्ता और विपक्ष, दोनों के लिए परीक्षा की घड़ी साबित होने वाले हैं।

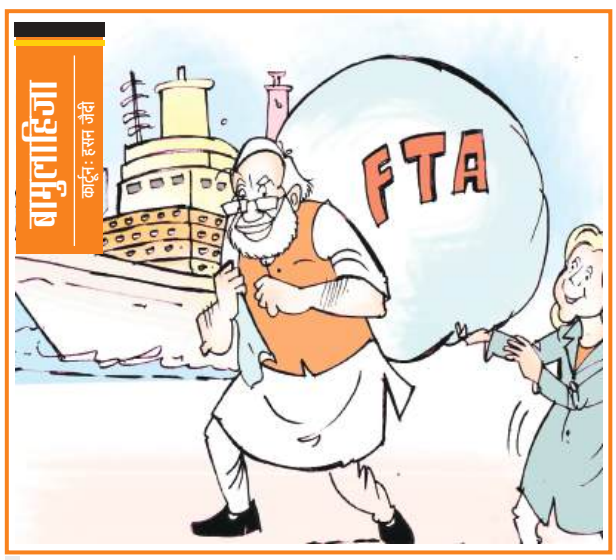

उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को सीएम बनाने की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। कर्नाटक की सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार में नेतृत्व को लेकर चल रहा विवाद अब निर्णायक मोड़ पर पहुँचता दिख रहा है। उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार के वफादार विधायकों ने बेंगलुरु के एक निजी होटल में शक्ति प्रदर्शन करते हुए आलाकमान से राज्य के शीर्ष पद (मुख्यमंत्री) पर शिवकुमार की ताजपोशी का रास्ता साफ करने की मांग की है।

मगाडी के विधायक एच.सी. बालकृष्ण द्वारा आयोजित इस बैठक ने राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है। कांग्रेस सूत्रों के अनुसार, लगभग 40 समान विचारधारा वाले विधायक इस बैठक में शामिल हुए। आधिकारिक तौर पर इसे बालकृष्ण के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मिलन समारोह बताया गया, लेकिन अंदरूनी चर्चा पूरी तरह नेतृत्व परिवर्तन पर केंद्रित थी।

40 समान विचारधारा वाले विधायकों ने की बैठक

कांग्रेस सूत्रों के अनुसार, बृहस्पतिवार रात को लगभग ''समान विचारधारा वाले 40 विधायक'' होटल में जुटे और शिवकुमार को मुख्यमंत्री पद पर आसीन कराने के लिए पैरवी करने का निर्णय लिया। शिवकुमार के वफादार बालकृष्ण ने संवाददाताओं से कहा कि उनका जन्मदिन शनिवार को है। मैं शुक्रवार सुबह से यहां (बेंगलुरु) नहीं रहूंगा, इसलिए मैंने बृहस्पतिवार को समान विचारधारा वाले लोगों को मिलने के लिए एक साथ आमंत्रित किया। हमने सभी को बुलाया और यह बैठक की। चर्चा के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, यदि पार्टी में ऐसी ही स्थिति रही तो भविष्य में हमारे लिए कठिनाई होगी। (शीर्ष नेतृत्व को) उन्हें इस मुद्दे (नेतृत्व विवाद) को सुलझाना चाहिए। हमने तय किया है कि हम उनसे ऐसा करने का आग्रह करेंगे।

एनसीपी के मर्जर पर लगा ग्रहण सुनेत्रा का बढ़ेगा पॉवर

अजित की विरासत बढ़ाने की तैयारी

परिवार की तीसरी पीढ़ी की तरह काम कर रही है सुनेत्रा

» पार्टी में बढ़ी सक्रियता
» महाराष्ट्र सियासत में मची हलचल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। एनसी के संभावित मर्जर को लेकर सियासी अटकलें तेज हो गई हैं। सुनेत्रा पवार की बढ़ती सक्रियता और अजित पवार की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाने की चर्चा ने महाराष्ट्र की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। महाराष्ट्र की राजनीति में हलचल मची हुई है। लंबे समय से चल रहे दोनों एनसीपी के मर्जर अब ग्रहण लगता हुआ दिखाई दे रहा है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को लेकर नई हलचल मच गई है डिप्टी सीएम सुनैत्रा पवार अब पार्टी की कमान संभालने की तैयारी में हैं। जानकारी के मुताबिक सोमवार को मुंबई में हुई एनसीपी नेताओं की बैठक में सुनेत्रा पवार को पार्टी का राष्ट्री अध्यक्ष बनाने पर सहमति बन गई है।

वहीं यह फैसला 26 फरवरी को आधिकारिक रूप से लिया जाएगा। आपको बता दें कि सुनैत्रा पवार अजित पवार की पत्नी हैं अब सरकार में भूमिका के साथ-साथ संगठन की जिम्मेदारी भी संभालेंगी। इससे अजित पवार की सियासी विरासत को आगे बढ़ाने का रास्ता साफ हो गया है। लेकिन बैठक में एनसीपी के दो गुटों (शरद पवार और अजित पवार गुट) के मर्जर पर कोई चर्चा नहीं हुई जिससे मर्जर के प्लान पर ग्रहण लगता दिख रहा है। वहीं अब यह घटना महाराष्ट्र की सियासत में नई बहस छेड़ रही है। जहां एनसीपी का भविष्य अब सुनेत्रा पवार के हाथों में नजर आ रहा है। वहीं सुनेत्रा पवार महाराष्ट्र की राजनीति में एक जाना-माना नाम हैं वे अजित पवार की पत्नी हैं, जो एनसीपी के प्रमुख नेता और महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम रह चुके हैं। सुनेत्रा पवार का जन्म एक राजनीतिक परिवार में हुआ था। और परिवार की राजनीतिक विरासत का हिस्सा हैं सुनेत्रा पवार ने पहले भी सामाजिक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाई है वे महिलाओं के अधिकार, शिक्षा और स्वास्थ्य के मुद्दों पर काम करती रही हैं हाल ही में जब अजित पवार ने महाराष्ट्र सरकार में डिप्टी सीएम का पद संभाला तो सुनेत्रा पवार भी राजनीतिक रूप से ज्यादा सक्रि य हो गईं वे अब सरकारी कार्यक्रमों में हिस्सा ले रही हैं और पार्टी के कार्यकर्ताओं से मिल रही हैं सुनेत्रा पवार की सक्रि यता से यह साफ हो रहा है कि वे अजित पवार की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं वे परिवार की तीसरी पीढ़ी की तरह काम कर रही हैं जहां शरद पवार और अजित पवार के बाद अब सुनेत्रा पवार का नाम जुड़ रहा है।

सर्व सहमति से राष्ट्रीय अध्यक्ष बनी

जानकारी के अनुसार मुंबई में एनसीप के वरिष्ठ नेताओं और विधायकों की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता सुनेत्रा पवार ने की बैठक में एनसीपी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल पटेल, राज्य इकाई के प्रमुख सुनील तटकरे, वरिष्ठ नेता छगन भुजबल और अन्य प्रमुख नेता मौजूद थे। बैठक में सुनैत्रा पवार को एनसीपी की नई राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव रखा गया प्रफुल पटेल ने सुनैत्रा पवार के नाम का प्रस्ताव पेश किया जिस पर सभी विधायकों और नेताओं ने हाथ उठाकर अपना समर्थन जताया बैठक में सभी ने एक स्वर में कहा कि सुनैत्रा पवार पार्टी को मजबूत करेंगी और अजित पवार की विरासत को आगे बढ़ाएंगी। बैठक में सुनैत्रा पवार ने भी अपने विचार रखे और उन्होंने कहा कि वे पार्टी को एकजुट रखने और विकास के लिए काम करेंगी। बैठक में यह भी तय हुआ कि 26 फरवरी को एनसीपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में सुनैत्रा पवार की नियुक्ति पर आधिकारिक मुहर लगाई जाएगी बैठक का माहौल बहुत सकारात्मक था और सभी ने तालियां बजाकर समर्थन जताया। दो गुटों—शरद पवार गुट और अजित

पवार गुट के मर्जर पर कोई बात नहीं हुई। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पिछले कुछ महीनों से एनसीपी के दोनों गुटों के विलय की चर्चा चल रही थी। शरद पवार गुट और अजित पवार गुट के बीच मतभेद बढ़ गए थे। लेकिन हाल में कुछ नेता विलय की मांग कर रहे थे, बैठक में यह मुद्दा इसलिए नहीं उठाया गया.क्योंकि अभी पार्टी अजित पवार की विरासत को मजबूत करने पर फोकस कर रही है सुनेत्रा पवार ने बैठक में साफ हिदायत दी कि विलय के मुद्दे पर मीडिया में कोई बयान न दें। इससे साफ है कि फिलहाल मर्जर का प्लान टाल दिया गया है कई नेता कह रहे हैं कि मर्जर पर ग्रहण लग गया है क्योंकि दोनों गुटों के बीच विश्वास की कमी है। शरद पवार गुट अलग से काम कर रहा है और अजित पवार गुट अपनी ताकत बढ़ा रहा है। पिछले कुछ सालों से विभाजन चल रहा है शरद पवार ने पार्टी की स्थापना की थी। लेकिन अजित पवार ने अलग गुट बना लिया। अजित पवार गुट अब महाराष्ट्र सरकार में शामिल है और अजित पवार डिप्टी सीएम हैं। शरद पवार गुट विपक्ष में है और उन्होंने अजित पवार गुट को एनसीपी का नाम और सिंबल इस्तेमाल करने से रोकने की कोशिश की चुनाव आयोग ने अजित पवार गुट को असली एनसीपी माना है लेकिन शरद पवार गुट ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है दोनों गुटों के विलय की चर्चा पिछले महीने शुरू हुई थी लेकिन सुनेत्रा पवार की बैठक में इस पर चुप्पी से लगता है कि विलय फिलहाल नहीं होगा सुनेत्रा पवार के नेतृत्व में अजित पवार गुट मजबूत हो रहा है।

सुनेत्रा पवार के अध्यक्ष बनने से अजित पवार गुट मजबूत होगा

वहीं अब यह घटना महाराष्ट्र की राजनीति में नई हलचल मचा रही है। एनसीपी का मर्जर नहीं होने से दोनों गुट अलग-अलग रहेंगे। अजित पवार गुट सरकार में है जबकि शरद पवार गुट विपक्ष में हैं सुनेत्रा पवार के अध्यक्ष बनने से अजित पवार गुट मजबूत होगा महाराष्ट्र में आने वाले चुनावों में एनसीपी की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। विपक्षी दल जैसे कांग्रेस और शिवसेना एनसीपी के विभाजन का फायदा उठा सकते हैं। एनसीपी की यह बैठक दिखाती है कि पार्टी अब परिवारवाद की ओर बढ़ रही है जहां सुनेत्रा पवार मुख्य भूमिका में हैं। जानकारी के मुताबिक 26 फरवरी को एनसीपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक होगी जहां सुनेत्रा पवार की नियुक्ति पर मुहर लगेगी उसके बाद पार्टी के संगठन में बदलाव हो सकते हैं अगर मर्जर नहीं हुआ तो NCP के दो गुट अलग-अलग चुनाव लड़ेंगे सुनेत्रा पवार की भूमिका से पार्टी में नई ऊर्जा आएगी महाराष्ट्र की सियासत में यह एक बड़ा बदलाव है जिससे साफ हो रहा है कि सुनेत्रा पवार अपने दम पर पार्टी को आगे ले जाना चाहती है।

सरकारी कार्यक्रमों में हिस्सा लिया

सरकारी कार्यक्रमों में हिस्सा ले रही हैंऔर पार्टी कार्यकर्ताओं से मिल रही हैं। बैठक में उन्होंने अपना सियासी जुड़ाव बताया और कहा कि वे विधायक दल की नेता और उपमुख्यमंत्री बनने की परिस्थितियों से परिचित हैं। सुनेत्रा पवार ने विधायकों से कहा कि वे पार्टी को एकजुट रखने के लिए यह जिम्मेदारी ले रही हैं। विधायकों ने उन्हें पूरा समर्थन दिया और कहा कि वे दिवंगत अजित पवार की विरासत को आगे बढ़ाएंगी। सुनेत्रा पवार की सक्रियता से लगता है कि वे एनसीपी को नई दिशा देंगी और महिलाओं को पार्टी में ज्यादा जगह देंगी।

अजित पवार की विरासत को आगे बढ़ाएंगी

सुनेत्रा पवार की मौजूदगी में हुई बैठक में विधायकों ने उन्हें पार्टी संगठन को मजबूत करने और दिवंगत अजित पवार की विरासत को आगे बढ़ाने में अपना समर्थन देने का आश्वासन दिया। एनसीपी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल पटेल, राज्य इकाई के प्रमुख सुनील तटकरे और वरिष्ठ पार्टी मंत्री छगन भुजबल ने बैठक को संबोधित किया और एनसीपी के विकास में अजित पवार की भूमिका और राज्य भर में इसके विस्तार की उनकी इच्छा को याद किया। डिप्टीसीएम सुनेत्रा पवार ने अजित पवार के साथ अपने सियासी जुड़ाव और उन परिस्थितियों के बारे में विस्तार से बताया, जिनके कारण वह विधायक दल की नेता और उपमुख्यमंत्री बनीं। उन्होंने एनसीपी विधायकों से कहा कि मैंने पार्टी को एकजुट रखने और उसकी स्थिति को मजबूत करने के लिए नई जिम्मेदारी स्वीकार करने का फैसला किया है। वहीं अजित पवार के निधन के बाद खाली हुई बारामती सीट से उपचुनाव लड़ेंगी। शपथ ग्रहण से पहले सुनेत्रा पवार ने अपनी राज्यसभा सीट छोड़ दी।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

बच्चों की मौत से देश की छवि पर असर

शहरों में आए दिन गड्ढों में बच्चों, युवकों व किशोरों के गिर की मरने की खबरें आ रहीं हैं। वहीं इससे पहले कप सिरप मामले में मध्य प्रदेश व राजस्थान में कई बच्चों की मौत से देश की छवि खराब हुई। उसके बाद राजस्थान में ओटी में आग लगने कुछ मरीजों की जान चली गई। उस पर से इन राज्यों के प्रशासन के संवेदनहीन व्यवहार पीड़ितों के घावों पर नमक रगड़। सवाल ये है मासूमों की मौत का जिम्मेदार कौन है। इनको कब सजा मिलेगी। राजस्थान में हालात और भी उलझे हुए हैं। सरकार द्वारा मुफ्त दवा योजना में बांटी जा रही डेक्स्ट्रोमेथॉर्फन-आधारित सिरप लेने के बाद सीकर, भरतपुर और बांसवाड़ा के कई बच्चों में गंभीर लक्षण दिखे, जैसे- उल्टी, चक्कर, बेहोशी और घबराहट। मध्य प्रदेश और राजस्थान से बच्चों की मौतों की जो खबरें आईं, उन्होंने पूरे देश की नींद उड़ा दी है। महज खांसी-जुकाम जैसी सामान्य बीमारी के लिए दी जाने वाली खांसी की दवा, बच्चों के जीवन पर इतनी घातक साबित होगी, इसकी कल्पना भी नहीं की गई थी।

मध्य प्रदेश और राजस्थान से बच्चों की मौतों की जो खबरें आईं, उन्होंने पूरे देश की नींद उड़ा दी है। महज़ खांसी-जुकाम जैसी सामान्य बीमारी के लिए दी जाने वाली खांसी की दवा, बच्चों के जीवन पर इतनी घातक साबित होगी, इसकी कल्पना भी नहीं की गई थी।

पिछले एक महीने में मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में 9 बच्चों की मौत और राजस्थान के विभिन्न जिलों में 3 बच्चों की मौत ने चिकित्सा व्यवस्था, दवा नियमन और प्रशासनिक सतर्कता, तीनों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। हालांकि केंद्र सरकार ने साफ किया है कि मध्य प्रदेश से लिए गए 19 सैंपल्स में से 9 की जांच रिपोर्ट में डायथिलीन ग्लाइकोल या एथिलीन ग्लाइकोल जैसी जानलेवा रसायनों की मौजूदगी नहीं पाई गई है। हम आपको बता दें कि यह वही तत्व हैं जिन्होंने 2019 में जम्मू और 2022-23 में गाम्बिया व उज्बेकिस्तान जैसे देशों में भारतीय दवाओं को लेकर वैश्विक स्तर पर विवाद व राजस्थान में हालात और भी उलझे हुए हैं। देखा जाये तो भारत दुनिया का फार्मेसी हब कहलाता है, लेकिन समय-समय पर घटिया दवाओं के मामले हमारी छवि को धूमिल करते हैं। सवाल यह है कि जब दवा कंपनियों के खिलाफ पहले से संदिग्ध रिपोर्ट थीं, तो उन्हें सरकारी योजनाओं में शामिल क्यों किया गया? साथ ही विशेषज्ञ लगातार कहते आए हैं कि दो साल से छोटे बच्चों को खांसी-जुकाम की दवाएं नहीं दी जानी चाहिए। लेकिन ग्रामीण और अर्धशहरी इलाकों में अक्सर बिना उचित परामर्श के इन्हें दिया जाता है। यही लापरवाही जानलेवा बनती है। केंद्र सरकार ने तो फिलहाल MP के सैंपल्स को सुरक्षित बताया है, लेकिन बाकी रिपोर्टें अभी आनी बाकी हैं। जब तक सभी जांच पूरी नहीं होतीं, तब तक कोई भी निष्कर्ष जल्दबाजी होगा। फिर भी राज्यों और केंद्र के बयानों में तालमेल की कमी आम जनता की चिंता बढ़ाती है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

उचित दाम और गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए

इंद्रजीत सिंह

कृषि मंत्रालय ने बीज संशोधन बिल 2025 का मसौदा जारी किया है, जिस पर 11 दिसंबर तक सार्वजनिक सुझाव मांगे गए थे। हमारे आसपास आज जो बीज हैं, उनकी विशेषताएं लाखों सालों के विकास से समुदायों ने अर्जित की हैं। बीज विज्ञान के प्रारंभ से पहले भी किसान अपनी निगाह से उन्नत किस्म के बीज तैयार करते थे, जिससे पैदावार अधिक होती थी। हालांकि, कृषि विज्ञान के विकास के बाद आधुनिक शोध ने बीज और उत्पादकता में महत्वपूर्ण प्रगति की है, फिर भी कुछ चुनौतियां बनी हुई हैं। नि:संदेह, बीज के भीतर भी एक बीज होता है उसमें 'जीन कोड' होते हैं जो पौधे के गुणों और उसकी विशेषताओं को अगली पीढ़ी की फसल में ट्रांसफर करने का काम करते हैं।

विभिन्न किस्मों के पौधों के मिश्रण से नई शंकर-हाइब्रिड किस्म निकाली जाती है। यह काम वैज्ञानिक लोग आधुनिक यंत्रों और तकनीक से करने लगे हैं जिसे 'जेनेटिक इंजीनियरिंग' कहते हैं। इससे पौधों की ऊंचाई, दाने या फल का आकार व रंग और भीतर के प्रोटीन आदि तत्व भी डाले जा सकते हैं। इस तकनीक से अगर खिलवाड़ की जाए तो उसके बहुत ही खतरनाक परिणाम भी निकल सकते हैं। वर्ष 1960-65 की 'हरित क्रांति' उत्पादन के मामले में भारत ने जो आत्मनिर्भरता हासिल की, उसमें अधिक उपज देने वाली गेहूं, चावल की नई किस्में तैयार करने का अहम योगदान था। उस समय बीज, दवाई, उर्वरक आदि पर निजी कंपनियों का विशेष नियंत्रण नहीं था और ये तमाम प्रबंध सरकारी विभागों और कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा ही किये गए थे। कृषि क्षेत्र में निजी पूंजी के प्रवेश के चलते और कृषि उपकरणों समेत बीज, दवाई आदि के मामले में देशी-विदेशी कंपनियों ने पैठ बना ली। सरकार किसानों के नाम पर जो सब्सिडी देती थी, उसका बड़ा हिस्सा इन्हीं कंपनियों के खाते में जाने लगा है। हरित क्रांति के उपरांत बीज के क्षेत्र में निजी कंपनियों ने अपना वर्चस्व बनाना शुरू किया। अंधाधुंध मुनाफे के लिए ज्यादा उत्पादन के दावे किए गए। लेकिन कीट व बीमारी के प्रकोप बढ़ गए क्योंकि पुराने बीजों में जो कुदरती तौर पर प्रतिरोधी गुण बीजों ने ग्रहण किए थे उनका क्षरण होने लगा। प्राइवेट कंपनियों ने कीटनाशक दवाइयां बेचने के लिए इसे भी एक अवसर की तरह देखा।

यहां बीटी कॉटन का उदाहरण सामने है। गुलाबी सुंडी की प्रतिरोधक क्षमता के दावे करके महंगे बीज बेचे गए और गुलाबी सुंडी से कपास उत्पादक किसानों की व्यापक बर्बादी हुई। नि:संदेह, बहुस्तरीय और कई साल की ट्रायल के बाद ही बीज की नई किस्मों को स्वीकृति

मिलती है। उसके बाद ही बीज को बेचे जाने की अनुमति मिल सकती है। बिक्री करने वाली कंपनी को विधिवत रजिस्ट्रेशन करवाना जरूरी है। लेकिन किसान अपने बचे हुए बीज को बेचने, बदलने, विकसित करने और उसे स्टाक करने के अधिकार भी रखता है। बीज नियमों के संचालन और निगरानी को लेकर बीज अधिनियम-1966 बना था, जिसके तहत ये आवश्यक प्रावधान हैं। क्वालिटी के बीज के दावे किए गए मापदंड, कंपनियां यदि पूरे न करें या उगने का प्रतिशत कम हो तो दंडात्मक कार्रवाई की जा सकती है। बहरहाल, कुछ दशकों से सार्वजनिक क्षेत्र, विश्वविद्यालय और बीज विकास संस्थानों को हाशिये पर रखकर नियमों को उदार करके निजी क्षेत्र के प्रवेश को सुगम बना दिया गया। आज 70 प्रतिशत देशी-विदेशी बीज कंपनियां निजी क्षेत्र की बीज मार्केट पर काबिज हो चुकी हैं। 56 प्रतिशत बीज की मार्केट पर मात्र 4 बहुराष्ट्रीय कंपनियों का नियंत्रण है। किसानों को अब इन्हीं कंपनियों के रहमो-करम पर निर्भर रहना पड़ता है। होना तो यह चाहिए था है कि क्वालिटी बीज का शोध, उत्पादन, वितरण सस्ते दामों पर सुलभता से सार्वजनिक व सहकारिता क्षेत्र के माध्यम से ही किसान को सुनिश्चित किया जाता। लेकिन बीज बिल 2025 लाकर केंद्र सरकार बीज के विषय का अति केंद्रीयकरण करना चाहती है। इस मसौदे में एक राष्ट्रीय कमेटी बनाने का प्रावधान है, जिसमें 5-7 राज्यों के ही प्रतिनिधि होंगे और कोई भी मामला नीतिगत है या नहीं, इस पर केंद्र का निर्णय अंतिम होगा। बिल के प्रस्तावित मसौदे में यदि कोई विदेशी बीज कंपनी अपने देश में ही बीज परीक्षण के ट्रायल करके यदि गुणवत्ता संबंधी स्वयं सत्यापन कर देगी तो वह भी मान्य होगा। ये बहुत घातक प्रावधान है। बीज संबंधी कानूनों का उद्देश्य गुणवत्ता का बीज सस्ते दामों पर किसान को मुहैया करवाने का होता है। इस आशय का आश्वासन ड्राफ्ट में नहीं है।

संसद में बताया गया कि 2022 से 2025 के बीच 43001 बीज के नमूने विफल पाए गए। आज जरूरी है कि केंद्र व राज्यों की बीज कमेटियों में कम से कम तीन किसान प्रतिनिधि भी शामिल किये जाएं। बिल मसौदे के चैप्टर 5 के भाग 27 में विदेश के बीजों की वहीं पर दी गई प्रामाणिकता को मंजूरी प्रदान किए जाने के प्रावधान को हटाया जाए। इसमें मूल्य निर्धारण के किसान हितैषी प्रावधान किए जाएं, और जमाखोरी, ब्लैक मार्केटिंग या इजारेदारी पर कड़ी रोक लगाई जाए। स्थानीय स्तर के स्वयं सहायता समूहों और बीज सहकारी समितियों को प्रोत्साहन दिया जाए।

खेलने कूदने से खिलखिलाता है बचपन

दीपिका अरोड़ा

नन्हे कंधों पर भारी-भरकम बस्ता, उनींदी आंखों में शत-प्रतिशत अंक पाने की जद्दोजहद, डिजिटल संसाधनों पर सर्च में जुटी नाजुक उंगलियां, कुल मिलाकर यह परिदृश्य है आधुनिक युग का, जिसने न केवल बचपन की सहजता छीन ली है बल्कि बच्चों को खेलकूद के मैदानों से भी दूर कर डाला है। यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन हेल्थ सीएस मॉट चिल्ड्रन हॉस्पिटल के सर्वेक्षणानुसार, प्रत्येक 10 में से 1 बच्चा सप्ताह में एक बार भी बाहर खेलने नहीं जाता। इसमें प्रमुख कारण है, बढ़ता स्क्रीनटाइम। स्कूली पढ़ाई के पश्चात ट्यूशन की भागम-भाग में इतना समय ही कहां मिलता है, जो बच्चों में बाहर जाकर खेलने की ललक शेष रहे? इसी कारण आजकल अधिकतर बच्चे आउटडोर खेल खेलने की बजाय सोशल मीडिया खंगालना अथवा ऑनलाइन गेम्स खेलना अधिक पसंद करते हैं।

अपनी अति व्यस्तता अथवा बच्चों को चोट लगने के भय से अनेक माता-पिता भी बच्चों को खेलने के लिए बाहर भेजने से गुरेज करते हैं। कुछ अभिभावकों को लगता है कि खेलकूद में समय बिताने से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होगी, जबकि विशेषज्ञों के कथनानुसार, नियमित रूप से खेलना-कूदना बच्चों की स्मरणशक्ति बढ़ाता है। उनमें कड़ी मेहनत तथा समर्पण की भावना विकसित होती है, जिससे वे पढ़ाई में सर्वोत्तम परिणाम देने के साथ अपने नियमित कार्य भी अधिक कुशलतापूर्वक कर पाते हैं। गहनतापूर्वक जांचें तो खेलकूद अपने आप में सर्वोत्तम व्यायाम है। मांसपेशियां मजबूत बनाने, रक्त संचार बेहतर करने, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा संक्रामक रोगों से बचाव करने के साथ ये अच्छी नींद लाने में भी मददगार बनते हैं। छोटी आयु से ही खेलों में भाग लेने से जहां शारीरिक पुष्टता बढ़ती है वहीं टीम वर्क, अनुशासन, सहनशीलता, सुनने-दूसरे का दृष्टिकोण समझने, समझौता करने जैसे आवश्यक गुण भी विकसित होते हैं। खेलने-कूदने से आत्मविश्वास बढ़ता है, संचार शैली सशक्त होती है। बच्चे दूसरों के समक्ष खुलकर अपनी बात रखना सीख जाते हैं।

खेल बच्चों को आत्मनिर्भरता, दृढ़ता तथा बारी-बारी से काम करने का कौशल बढ़ाने में तो सक्षम बनाता ही है, व्यक्तिगत भावनाएं समझने तथा प्रबंधित करना सीखने के लिए भी उन्हें एक सुरक्षित स्थान प्रदान करता है। इससे जहां लचीलापन अपनाने तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने में सहायता मिलती है, वहीं रचनात्मकता व कल्पनाशीलता को भी अपेक्षित विस्तार मिलता है। खेलकूद नशे जैसी बुराइयों से दूर रखने में सहायक सिद्ध होते हैं। 'द लैंसेट' पत्रिका के एक अध्ययन में जापान के बच्चे सबसे अधिक स्वस्थ पाए गए। इसका श्रेय निश्चय ही उनके स्वास्थ्यवर्द्धक आहार एवं चुस्त दिनचर्या को जाता है। पाठशाला जाने के लिए बस की अपेक्षा वे पैदल चलना ज्यादा पसंद करते हैं। अपना कार्य स्वयंमेव निपटाना उनकी आदत में शामिल है, जबकि इस संदर्भ में भारत के बहुतेरे बच्चों की स्थिति कमोबेश विपरीत ही मिलेगी।

आधुनिक बच्चों में संवेदना दिनों-दिन कम हो रही है, वे नाकामी का सामना नहीं कर पाते, उनकी प्रॉब्लम सॉल्विंग क्षमता घट रही है; बाल मनोचिकित्सक इन सबके पीछे परिवर्तित जीवनशैली को मुख्य दोषी ठहराते हैं। समस्यायों से छुटकारा देश के शीर्ष संगठनों में शामिल 'एडुस्पॉर्ट्स' की एक हेल्थ एवं फिटनेस स्टडी के अनुसार, देश में स्कूली बच्चों-किशोरों का स्वास्थ्य एवं फिटनेस का स्तर लगातार गिर रहा है। कम उम्र बच्चे भी मधुमेह, अस्थमा जैसी बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। देश के ताजा आर्थिक सर्वेक्षण के तहत, 2020 के दौरान भारत में 3.3 करोड़ से अधिक बच्चे मोटापे के शिकार थे। 2035 तक आंकड़ा 8.3 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। शारीरिक सक्रियता का अभाव बच्चों का दैहिक लचीलापन कम कर रहा है। ऐसी स्थिति में उनका बाहर निकलकर खेलना और भी महत्वपूर्ण बन जाता है। जॉयस मेयर ने कहा है, 'हम अपने परिवार को जो सबसे सुंदर तोहफा दे सकते हैं, वह है खुद की अच्छी सेहत।' अभिभावकों के लिए जरूरी है कि समय निकालकर बच्चों को प्रतिदिन कम से कम तीस मिनट के लिए साइकिलिंग, रनिंग, जंपिंग आदि गतिविधियों का हिस्सा अवश्य बनाएं।

मॉट पोल की सह-निदेशक सारा क्लार्क के मुताबिक पेड़ पर चढ़ना, साइकिल चलाना या झूले से फिसलना बच्चों के विकास के लिए अनिवार्य है। खेल के दौरान लगी छोटी-मोटी चोटें, दरअसल, बच्चों को समूचे तौर पर मजबूत बनाने का कार्य करती हैं। इनसे आत्मविश्वास, सहनशीलता और समस्या सुलझाने की क्षमता बढ़ती है। तुलनात्मक तौर पर बीते बीस-पच्चीस वर्षों का जायजा लें तो शहरों का भूगोल काफी हद तक बदल चुका है, पहले की भांति बच्चों के खेलने के लिए अधिक स्थान उपलब्ध नहीं। ऐसे में विद्यालयों का दायित्व भी बढ़ जाता है कि शारीरिक शिक्षा पीरियड के तहत वे रोजाना एक-आध घंटा बच्चों के खेलने हेतु अवश्य सुनिश्चित करें। वास्तव में खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलकूद से ही बचपन खिलता है, बच्चों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का आत्मबल मिलता है। प्रश्न समग्र विकास का है, क्यों न आभासी संसार में डूबे बच्चों का रुख खुले मैदानों की तरफ़ मोड़ा जाए, जहां उन्मुक्त सांस लेते हुए वे अपने व्यक्तित्व को सम्पूर्णता दे पाएं?

अपनों को खिलाएं एप्पल गुझिया

होली एक ऐसा त्योहार है जिसमें लोग अपनी दुश्मनी भुला कर एक ही रंग में रंग जाते हैं। इस साल 4 मार्च को होली का ये त्योहार मनाया जाएगा। इस जश्न को मनाने के बाद लोग होली की बधाई देने के लिए एक-दूसरे के घर जाते हैं। इसी के चलते लोग अपने-अपने घरों में कई तरह के खाने के सामान बनाते हैं। होली के त्योहार में गुजिया एक ऐसी चीज है जो तकरीबन हर एक घर में मिल जाएगी। गुजिया बनाना वैसे तो ज्यादा कोई मुश्किल काम नहीं है, पर हर साल एक जैसी गुजिया खाकर लोग बोर होने लगे हैं। ऐसे में आप एक खास तरह की गुजिया बनाइए। जिसे खाकर लोग आपकी तारीफ करने लगेंगे। दरअसल, हम आपको एप्पल गुजिया के बारे में बात कर रहे हैं। जिसे बनाना काफी आसान है।

सामग्री

3 कप मैदा, 300 ग्राम खोया, 1/4 कप सूजी, 1/2 कप घी, 1.5 कप कसे हुए सेब, 2 चम्मच काजू, 20 किशिमिश, 300 ग्राम पाउडर शुगर, 2 चम्मच पिस्ता, 2 चम्मच बादाम, आधा चम्मच हरी इलायची।

विधि

एप्पल गुजिया बनाने के लिए सबसे पहले मैदा में घी अच्छे से मिलाएं। इसके बाद अब धीरे-धीरे पानी डालते हुए मैदा को गूंथ लें। मैदा को अच्छे से गूंथ कर इसे अलग ढक कर रख दें। अब एक कढ़ाई में खोया और सूजी को सुनहरा होन तक भूनें। इसे ठंडा होने के बाद इसमें हर तरीके के ड्राईफ्रूट डालें। इसके बाद अब एक पैन लें और इसमें कसे हुए सेब डालकर इसे सुखा लें। अब इसमें चीनी और खोया डालकर अच्छे से मिलाएं। इसके बाद आपकी स्टफिंग तैयार हैं। अब तैयार मैदा की छोटी-छोटी लोई बनाकर इसमें स्टफिंग डालें। इसे सांचे की मदद से फोल्ड करें। अब लास्ट में इसे केसर के धागों के सजाएं और अपने मेहमानों को खिलाएं।

घर पर बनाएं मसाला पराठा

त्योहारी सीजन में घर में कुछ अलग खाने का मन करता है क्योंकि हम हर रोज वही रोटी सब्जी खाते-खाते बोर हो जाते हैं। तो ऐसे में मसाला पराठा बनाएं। जिसे आप घर पर ही बड़ी आसानी से बना सकते हैं। भारतीय घरों में पराठा एक ऐसी डिश है जिसे लोग नाश्ते में बड़े चाव के खाते हैं। कभी आलू के पराठे तो कभी गोभी के, इतना ही नहीं पराठे तो पनीर के भी काफी लजीज लगते हैं। पर अगर इनसे भी मन भर जाए तो आप मसाला पराठा बना सकते हैं। ये खाने में जितना टेस्टी और अलग होगा उतना ही इसे बनाना आसान होता है। तो आप अगर रोज एक जैसा नाश्ता करते-करते बोर हो गए हैं और पराठे की वैराइटीज में भी कुछ अलग ट्राई करना चाहते हैं तो मसाला पराठा एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है।

सामग्री

आटा- 1 कप, बेसन-1 कप, जीरा- 1/2 टी स्पून, अजवाइन- 1 टी स्पून, अदरक पेस्ट- 1 टी स्पून, लाल मिर्च पाउडर- 1 टी स्पून, हींग-1 चुटकी, कसूरी मेथी-1 टेबलस्पून, हरा धनिया कटा- 2 टेबलस्पून, तेल- जरूरत के मुताबिक, नमक- स्वादानुसार

विधि

मसाला पराठा बनाने के लिए एक बाउल में आटा और बेसन छान कर मिक्स करें। इसके बाद इसमें लाल मिर्च के साथ जीरा, अजवाइन, हींग, कसूरी मेथी, बारीक कटा हरा धनिया और स्वादानुसार नमक आटे के मिक्सर में मिला दें। पराठे को खस्ता बनाने के लिए इसमें एक चम्मच तेल डालें। अब थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए इसे अच्छे से गूंथ लें। अब इसे ढक कर आधे घंटे के लिए रख दें। आधे घंटे के बाद इसे एक बार फिर से अच्छे से गूंथ लें। अब इसकी लोइयां तैयार करके तवे को गर्म करने रख दें। इस के बाद लोइ का गोल या तिकोना पराठा बेल लें। अब तवे पर थोड़ा सा तेल डालकर चारों ओर फैला दें। पराठे को सुनहरा होने तक सेकें। अब इसी तरह बाकी पराठे भी सेंक लें। इसे चाय के साथ हरी चटनी और केचअप के साथ सर्व करें।

हंसना मना है

एक लड़की- हे भगवान, मेरी शादी किसी समझदार आदमी से करवा दो, भगवान बोले- घर जाओ बेटी क्योंकि समझदार आदमी कभी शादी नहीं किया करते!

एक लड़का फेल हुआ तो उसके पापा ने कहा, देख-देख उस लड़की को देख, वो तुम्हारे साथ पढ़ती है और 1st आयी है। लड़का- देख देख क्या देख, उसी को देख देख के तो फेल हुआ हूं!

लड़की- अगर मैं मर जाऊं तो तुम क्या करोगे? लड़का- मैं भी मर जाऊंगा, लड़की- पर क्यों? लड़का- क्योंकि कभी कभी ज्यादा खुशी भी जान ले लेती है!

फेंकू- पप्पू, जल्दी से टीवी चालू कर, 30 फीट का सांप दिखा रहे हैं, पप्पू- अरे फेंकू, नहीं देख सकते हम लोग, फेंकू- क्यों? पप्पू- क्योंकि हमारा टीवी 21 इंच का ही है ना।

कहानी — एकलव्य की कथा

एक जंगल में एकलव्य नाम का एक बालक अपने माता-पिता के साथ रहता था। एकलव्य की धनुर्विद्या में बहुत रुचि थी, लेकिन जंगल में इसके लिए साधन उपलब्ध नहीं थे। इसलिए, वह गुरु द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीखना चाहता था। गुरु द्रोणाचार्य उन दिनों पांडव और कौरवों को धनुर्विद्या सिखा रहे थे और उन्होंने भीष्म पितामह को वचन दिया था कि वह राजकुमारों के अलावा किसी को भी धनुर्विद्या का ज्ञान नहीं देंगे। जब एकलव्य अपना निवेदन लेकर गुरु द्रोणाचार्य के पास आया, तो उन्होंने उसे अपनी विवशता बताकर वापस भेज दिया। इस पर एकलव्य बहुत दुखी हुआ, लेकिन उसने यह प्रण लिया कि वह द्रोणाचार्य को ही अपना गुरु बनाएगा। उसने उनकी मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसके सामने तीर कमान चलाने का अभ्यास करने लगा। देखते ही देखते वह एक उम्दा धनुर्धारी बन गया। एक दिन जब गुरु द्रोणाचार्य अपने शिष्यों के साथ धनुर्विद्या का अभ्यास करने जंगल की ओर आए। उनके साथ एक कुत्ता भी था। उस समय एकलव्य भी जंगल में धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा था। ऐसे में जब कुत्ते को जंगल के एक ओर से आवाज आई, तो वह उस ओर जाकर भौकनें लगा, इस वजह से कुत्ते को चुप करवाने के लिए एकलव्य ने उसके मुंह में कुछ इस प्रकार बाण चलाए कि उसका भौंकना भी बंद हो गया और उसे कोई चोट भी आई। जब द्रोणाचार्य ने कुत्ते को देखा को उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने सोचा कि इतना अच्छा धनुर्धारी कौन है, जिसे धनुष बाण की ऐसी विद्या आती है। जब उन्होंने जाकर देखा, तो एकलव्य खड़ा था। अपने गुरु को देखकर एकलव्य ने उन्हें प्रणाम किया। द्रोणाचार्य ने उससे पूछा कि उसने यह विद्या किससे सीखी, तो एकलव्य ने बताया कि वह किस प्रकार उनकी मूर्ति के सामने प्रतिदिन अभ्यास करता है। यह सुनकर द्रोणाचार्य आश्चर्यचकित हुए। दरअसल, गुरु द्रोणाचार्य ने अर्जुन को वचन दिया था कि उससे बेहतर धनुर्धारी कोई नहीं होगा, लेकिन एकलव्य की विद्या उनके इस वचन में बाधा बन रही थी। ऐसे में उन्होंने कहा, मुझे गुरु दक्षिणा तो अभी तक नहीं दी है। आपको दक्षिणा में क्या चाहिए। द्रोणाचार्य ने कहा कि मुझे तुम्हारे दाहिने हाथ का अंगूठा चाहिए। एकलव्य ने तुरंत अपनी कृपाण निकाली और अपना अंगूठा काट कर गुरु द्रोणाचार्य के चरणों में रख दिया। इस घटना की वजह से एकलव्य का नाम एक आदर्श शिष्य के रूप में आज भी याद किया जाता है।

7 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — वाणी पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। विवेक से कार्य करें। शेयर मार्केट व म्युचुअल फंड से लाभ होगा। स्थायी संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं।

वृषभ — पार्टी व पिकनिक का कार्यक्रम बनेगा। मनोरंजन का समय मिलेगा। रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। मनपसंद भोजन का आनंद मिलेगा। कारोबारी वृद्धि की योजना बनेगी।

मिथुन — बुरी खबर प्राप्त हो सकती है। दौड़धूप अधिक होगी। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। काम में मन नहीं लगेगा।

कर्क — थकान व कमजोरी रह सकती है। खान-पान पर ध्यान दें। घर-परिवार की चिंता बनी रहेगी। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मित्रों की सहायता करने का मौका मिलेगा।

सिंह — विवाद को बढ़ावा न दें। हल्की हंसी-मजाक करने से बचें। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। आत्मसम्मान बनेगा। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। नए मित्र बनेंगे।

कन्या — उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। यात्रा मनोरंजक रहेगी। नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति पर व्यय होगा। व्यापार लाभदायक रहेगा। कोई बड़ा कार्य होने से प्रसन्नता रहेगी।

तुला — स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। विवाद को बढ़ावा न दें। बनते काम बिगड़ सकते हैं। तनाव रहेगा। व्यापार ठीक चलेगा। यात्रा में विशेष सावधानी रखें। विवाद में न पड़ें।

वृश्चिक — दूर से अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है, प्रयास करें। यात्रा मनोरंजक रहेगी। प्रसन्नता रहेगी।

धनु — लेन-देन में जल्दबाजी न करें। समय अनुकूल है। कोई आवश्यक वस्तु समय पर नहीं मिलने से खिन्नता रहेगी। कार्यस्थल पर परिवर्तन हो सकता है।

मकर — वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। कानूनी अड़चन दूर होगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। यात्रा मनोरंजक रहेगी। मनोरंजन के साधन प्राप्त होंगे।

कुम्भ — मित्रों तथा रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। मनोरंजन होगा। चोट व दुर्घटना से हानि संभव है। जल्दबाजी व लापरवाही भारी पड़ सकती है।

मीन — बुद्धि का प्रयोग किसी भी समस्या का निवारण कर सकता है, यह याद रखें। किसी प्रभावशाली व्यक्ति का मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होगा। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

बॉलीवुड | मन की बात

मैं चलती फिरती चेक बुक हूं : राजपाल यादव

5 फरवरी को दिल्ली हाई कोर्ट ने 9 करोड़ रुपये के चेक बाउंस केस में बकाया चुकाने के लिए और समय मांगने वाली राजपाल यादव की अर्जी खारिज कर दी थी। जिसके बाद एक्टप ने तिहाड़ जेल में सरेंडर किया था। एक्टर को 17 फरवरी को बेल मिली थी। दिल्ली हाईकोर्ट ने उन्हें अंतरिम राहत देते हुए 18 मार्च तक उनकी सज़ा सस्पेंड कर दी थी। वहीं तिहाड़ जेल में सरेंडर करने से पहले, राजपाल यादव कथित तौर पर काफी परेशान हालत में थे। उनके हवाले से कहा गया था, मेरे पास पैसे नहीं हैं। मुझे कोई दूसरा ऑप्शन नहीं मिल रहा है। मैं यहां बिल्कुल अकेला हूं। मुझे इस मुश्किल से अकेले ही निपटना होगा। अब जेल से बेल पर रिहा होने के बाद, एक्टर ने अपने बयान और क्या उनके पास सच में पैसे हैं, इस बारे में बात की है। बता दें कि राजपाल यादव ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा, मैं अभी इस पर कमेंट नहीं कर सकता, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि मैं पैसों से घिरा हुआ हूं, राजपाल चलती फिरती चेक बुक है। मैं पैसा कमाता हूं, मैं लोगों को पैसा कमाने में मदद करता हूं, और कई घर इस पर डिपेंड करते हैं। राजपाल ने इस दौरान अपने छोटे से पॉलिटिकल सफ़र के बारे में भी बताया, और साफ़ किया कि उन्होंने राजनीति क्यों छोड़ी थी। उन्होंने कहा, 2019 में, मैंने पॉलिटिक्स छोड़ दी क्योंकि मैं बस अपने लोगों की सेवा करना चाहता था। जेल से रिहा होने के बाद, एक्टर ने चल रही कानूनी कार्रवाई पर ध्यान न देने का फ़ैसला किया। इसके बजाय, उन्होंने शुक्रगुज़ारी और उन लोगों के बारे में डिटेल में बात की जो उनके सबसे मुश्किल समय में उनके साथ खड़े रहे।

12 साल बाद सिनेमाघरों में फिर से रिलीज होगी सिद्धार्थ और परिणीति की फिल्म 'हंसी तो फंसी'

साल 2014 में आई रोमांटिक ड्रामा फिल्म हंसी तो फंसी में परिणीति चोपड़ा और सिद्धार्थ मल्होत्रा लीड रोल में नजर आए थे। इस फिल्म ने पिछले 12 सालों में एक कल्ट फिल्म का दर्जा हासिल कर लिया है। वहीं सिद्धार्थ मल्होत्रा और परिणीति चोपड़ा के फैंस के लिए बड़ी खबर है। जानकारी के अनुसार उनकी ये फिल्म सिनेमाघरों में री-रिलीज होने वाली है। पीवीआर आईएनओएक्स ने गुरुवार को एक आधिकारिक बयान में घोषणा की कि फिल्म 6 मार्च को फिर से रिलीज होगी।

अनुराग कश्यप ने लिखे हैं फिल्म के डायलॉग्स

करण जौहर, विकास बहल, विक्रम आदित्य मोटवाने और अनुराग कश्यप द्वारा निर्मित हंसी तो फंसी से विनील मैथ्यू ने निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा था। फिल्म में होने वाले दूल्हे निखिल (सिद्धार्थ) और साइंटिस्ट मीता (परिनीति) के बीच एक अनोखे प्रेम प्रसंग की कहानी दिखाई गई है, जिनके साथ शादी से पहले बहुत कुछ घटित होता है। अनुराग कश्यप ने फिल्म के डायलॉग्स भी लिखे थे।

हंसी तो फंसी ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन किया और लगभग 36.5 करोड़ रुपये की कमाई की। हालांकि, फिल्म की असली सफलता इसके थिएटर रन के बाद शुरू हुई। फिल्म में दिखाए गए खूबसूरत रोमांस और इसके बेहतरीन गानों ने एक अलग ही फैन बेस तैयार कर लिया। फिल्म की री रिलीज के बारे में बात करते हुए करण जौहर ने कहा, हंसी तो फंसी मेरे दिल में एक खास जगह रखती है। यह फिल्म दो अलग-थलग लोगों की प्रेम कहानी है, जैसा कि मैं इसे प्यार से कहता हूं। यह इस विचार का जश्न मनाती है कि आप परफेक्शन से प्यार नहीं करते; आप अराजकता से, व्यक्तित्व से, उस व्यक्ति से प्यार करते हैं जो आपकी दुनिया को खुशी से उलट-पुलट कर देता है। दर्शकों को सिनेमाघरों में उस जादू को फिर से अनुभव करते देखना रोमांचक है। इस फिल्म में परिणीति और सिद्धार्थ की केमिस्ट्री को खूब पसंद किए जाने के बावजूद दोनों एक्टर्स दोबारा फिर किसी फिल्म में नजर नहीं आए।

बॉर्डर 2 के बाद गबरू बन दहाड़ेंगे बन छाएंगे सनी देओल

बॉर्डर 2 की अपार सफलता का बाद सिनेप्रेमी सुपरस्टार सनी देओल की अपकमिंग फिल्म का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, जिसका नाम गबरू है। बीते साल सनी ने अपनी इस मूवी की अनाउंसमेंट की थी। अब एक बार फिर से गबरू चर्चा में आ गई है। गुरुवार को सनी देओल की तरफ से गबरू के टीजर को लेकर जरूर अपडेट साझा किया गया है, जिसे जानने के बाद फैंस की एक्साइटमेंट बढ़ने वाली है। 26 फरवरी को सनी देओल ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर एक स्टोरी को शेयर किया है, जिसमें वह गबरू के मेकर्स के संग नजर आ रहे हैं। इस पर कैप्शन में उन्होंने लिखा है कि जल्द ही गबरू का लेटेस्ट टीजर रिलीज किया जाएगा। हालांकि, रिलीज डेट के बारे में खुलासा नहीं किया गया है।

गबरू को लेकर सनी देओल काफी एक्साइटेड हैं। बॉर्डर 2 की सक्सेस प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान सनी ने बताया था- गबरू मेरे दिल के बेहद करीब फिल्म है। इसकी कहानी और किरदार मुझे काफी पसंद आया है। हम इसे मास रिलीज के तौर पर नहीं लेकर जा रहे। लिमिटेड स्क्रीन्स की योजना बनाई जा रही है, सोफ्ट मूवी के तौर पर हमने गबरू को बनाया है। उम्मीद करता हूं कि आप सब को भी ये फिल्म पसंद आएगी।

सनी देओल की अपकमिंग मूवी गबरू के बारे में और जानकारी देते हुए बता दें कि इस फिल्म का निर्देशन डायरेक्टर शंशाक उधपुरकर ने किया है। मूवी का फर्स्ट लुक मोशन पोस्टर पहले शेयर किया जा चुका है, जिसमें सनी का इंटेंस लुक देखने को मिला।

जब सनी देओल ने गबरू के फर्स्ट लुक पोस्टर को शेयर किया था, तब इस बात की जानकारी दी गई थी 13 मार्च 2026 रिलीज किया था। लेकिन अब इसमें बदलाव कर दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार अब गबरू को नई रिलीज डेट मिल गई है, उस आधार पर गबरू 8 मई 2026 को सिनेमाघरो में दस्तक दे सकती है।

अजब-गजब | स्ट्रेस कम करने का अजीब तरीका!

यहां ताबूत में आराम कर रहे लोग 30 मिनट के लिए दे रहे 1100 रुपये

हर इंसान आराम और शांति की जिंदगी चाहता है। पर लोगों को आज के वक्त में आराम कहां ही नसीब है। आपको हमेशा दौड़ते-भागते रहना पड़ता है। पर ऐसा लग रहा है कि जापान में लोगों को आराम की जिंदगी नसीब हो रही है। पर उसे पाने के लिए वो अजीबोगरीब काम कर रहे हैं। वो सीधे ताबूत में लेट कर आराम फरमा रहे हैं। इस वजह से लोगों का कहान है, कि ये हकीकत में 'रेस्ट इन पीस' हो गया।

न्यूयॉर्क पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार जापान में एक अजीबोगरीब ट्रेंड चर्चा में है। इस ट्रेंड का नाम है कॉफिन लाइंग। इसका ये मतलब है कि लोग ताबूत के अंदर लेटकर ध्यान लगा रहे हैं। यहां लेटे-लेटे वो जिंदगी और मौत के बारे में सोचते हैं। आपको बता दें कि ये विचार सबसे पहले चीबा पर्फेक्चर के एक फ्यूनरल होम में आया था। पर अब ये विचार लोगों के बीच बहुत ज्यादा पॉपुलर हो गया है, जिन्हें सुख-शांति की कामना है। लोग मेंटल रिलैक्सेशन भी चाहते हैं। लोग ताबूत को शांत जगह की तरह चुन रहे हैं, जहां वो अपनी जिंदगी के बारे में सोच सकें और स्ट्रेस कम कर सकें।

जापानी कल्चर में कूयो नाम की प्रथा पहले से है जिसमें मर चुके लोगों को याद किया जाता है और उनका सम्मान किया जाता है। जापानी लोग मानते हैं कि जिंदगी कमजोर है, कभी भी खत्म हो सकती है और मौत प्रकृतिक घटना है, उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। ये ट्रेंड तब ज्यादा बढ़ रहा है, जब जापान के आम लोगों में सुसाइड रेट बहुत ज्यादा बढ़ रहे हैं। इस वजह से कई बिजनेस मेंटल हेल्थ को सपोर्ट करने के लिए अलग-अलग तरह के क्रिएटिव तरीके अपना रहे हैं।

जो कंपनियां कॉफिन मेडिटेशन की सुविधा दे रही हैं, उनका कहना है कि इसके जरिए लोग अकेले में वक्त बिता रहे हैं और अपने विचारों को बेहतर ढंग से समझ पा रहे हैं। अब तो अलग-अलग तरह के ताबूत भी आ रहे हैं, जो लोगों की पर्सनैलिटी के हिसाब से हैं। अगर नॉर्मल सा लकड़ी का ताबूत बहुत गंभीर लग रहा है, तो लोग क्यूट कॉफिन्स चुन रहे हैं। टोक्यो के एक स्पा, मीसो कुकान कानोके इन में ये सुविधा उपलब्ध है। ये कॉफिन रंगीन होते हैं और दिखने में काफी स्टाइलिश नजर आते हैं।

इसे ग्रेव टोक्यो नाम की कंपनी ने डिजाइन किया है। लोग चुन सकते हैं कि वो अपने 30 मिनट के सेशन में क्या करना चाहते हैं जिसकी कीमत 13 डॉलर (1181 रुपये) है। लोग चाहें तो खुला ताबूत चुन सकते हैं और अगर उनका मन करे तो वो बंद वाला भी चुन सकते हैं। वो शांत करने वाले म्यूजिक को सुन सकते हैं और या फिर ताबूत में लेटे-लेटे छत पर कोई वीडियो देख सकते हैं। इसके अलावा वो चाहें तो शांत भी रह सकते हैं। मिकाको फ्यूज का कहना है कि वो लोगों को ये एहसास दिलाना चाहती हैं कि मौत हमेशा डार्क या डरावनी नहीं होती।

एमपी का 200 साल पुराना चमत्कारी पेड़! गांववाले कहते राजा-रानी का प्यार

मध्य प्रदेश के शिवपुरी से करीब 35 किलोमीटर दूर लुकवासा गांव में एक ऐसी जगह है, जहां लोग सिर्फ दर्शन करने नहीं, बल्कि उम्मीद लेकर आते हैं। यहां मौजूद है करीब 200 साल पुरानी कल्पवृक्ष की जोड़ी, जिसे गांव वाले प्यार से 'राजा-रानी' कहते हैं। कहते हैं, यहां सच्चे मन से जो भी मांगो, वो खाली नहीं जाता। आमतौर पर कल्पवृक्ष का मिलना ही दुर्लभ माना जाता है, लेकिन लुकवासा में दो पेड़ साथ-साथ खड़े हैं। पतले तने वाले पेड़ को 'राजा' यानी नर और मोटे तने वाले को 'रानी' यानी मादा कहा जाता है। दोनों की डालियां इस तरह आपस में उलझी दिखती हैं, जैसे कोई दंपति सालों से साथ खड़ा हो। गांव के बुजुर्ग बताते हैं कि ये पेड़ सिर्फ पेड़ नहीं, आस्था का प्रतीक हैं। शादी, संतान, नौकरी, सेहत हर मनोकामना लेकर लोग यहां आते हैं। ग्रामीणों के मुताबिक इन पेड़ों के फल भी अलग तरह के होते हैं। देखने में आम, नारियल और बेल के मिश्रण जैसे लगते हैं। पकने के बाद रंग और आकार सूखे खजूर जैसा हो जाता है। वनस्पति विशेषज्ञ इसे दुर्लभ प्रजाति मानते हैं, लेकिन गांव वालों के लिए ये चमत्कार से कम नहीं। लोग पेड़ के नीचे धागा बांधते हैं, दीप जलाते हैं और मन ही मन अपनी इच्छा बोलते हैं। कई श्रद्धालु बताते हैं कि उनकी मनोकामना पूरी होने के बाद वे दोबारा यहां धन्यवाद देने जरूर आते हैं। त्योहारों पर यहां छोटा सा मेला जैसा माहौल बन जाता है। लुकवासा का ये स्थल सिर्फ धार्मिक नहीं, पर्यावरण की दृष्टि से भी अहम है। इतने पुराने पेड़ों को सुरक्षित रखना बड़ी जिम्मेदारी है, और गांव वाले इसे अपनी सेवा मानते हैं। 'राजा-रानी' की ये जोड़ी आज भी लोगों को विश्वास, सुकून और उम्मीद देती है। जो भी यहां आता है, कुछ पल इनके साए में बैठकर अलग ही शांति महसूस करता है।

तमिलनाडु में सियासी उलटफेर

» स्टालिन की मौजूदगी में पूर्व मुख्यमंत्री सत्तारूढ़ द्रमुक में हुए शामिल

» दिवंगत जे जयललिता के विश्वासपात्र हैं पन्नीरसेल्वम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु की राजनीति में एक बड़े उलटफेर में, अन्नाद्रमुक से निष्कासित पूर्व मुख्यमंत्री ओ पन्नीरसेल्वम मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की मौजूदगी में सत्तारूढ़ द्रमुक में शामिल हो गए। जयललिता के पूर्व विश्वासपात्र का यह कदम, अपने पुराने दल में वापसी के असफल प्रयासों के बाद राज्य में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक बदलाव का संकेत देता है। इसे फै सले से एनडीए को करारा झटका लगा है। सबसे ज्यादा बीजेपी को नुकसान हुआ है जो राज्य में अपना फै लाव चाहती है।

तमिलनाडु के तीन बार मुख्यमंत्री रहे और अन्नाद्रमुक से 2022 में निष्कासित ओ पन्नीरसेल्वम शुक्रवार को मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की मौजूदगी में सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) में शामिल हो गए। पन्नीरसेल्वम ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (अन्नाद्रमुक) की सुप्रीमो दिवंगत जे जयललिता के विश्वासपात्र माने जाते थे। अपने मातृ संगठन में फिर से शामिल होने के लिए तीन साल के असफल प्रयास के बाद वह द्रमुक में शामिल हो गए। ओ पनीरसेल्वम अपने समर्थकों के साथ द्रमुक में शामिल हुए। पूर्व एआईएडीएमके सुप्रीमो जयललिता के लंबे समय से वफादार रहे ओपीएस को मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने चेन्नई स्थित पार्टी मुख्यालय में वरिष्ठ मंत्रियों की उपस्थिति में औपचारिक रूप से डीएमके में शामिल किया। सूत्रों के अनुसार आगामी चुनावों में ओपीएस को उनके गृह क्षेत्र थेनी के बोडी मेट्टू निर्वाचन क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया जा सकता है।

एनडीए का ओ पन्नीरसेल्वम ने छोड़ा साथ

पार्टी के विकास के लिए काम करूंगा : पन्नीरसेल्वम

वहीं डीएमके में शामिल होने के बाद ओ. पन्नीरसेल्वम ने कहा, स्टालिन लोगों को अच्छा शासन दे रहे हैं और लोग इसे देख रहे हैं। ईपीएस यह पक्का करना चाहते हैं कि दक्षिण से कोई भी नेता मजबूत न हो। द्रविड़ आंदोलन, द्रविड़ की नीति को बचाने के लिए डीएमके ही काम कर रही है। मैं अभी एक कैडर के तौर पर शामिल हुआ हूं। मैं पार्टी कैडर में से एक रहूंगा और पार्टी के विकास के लिए काम करूंगा।

एआईएडीएमके का जीतना अब असंभव

उन्होंने स्टालिन की पार्टी में शामिल होने पर मीडिया से बात करते हुए कहा कि मैं मुख्यमंत्री और डीएमके अध्यक्ष स्टालिन का आभारी हूं। मैं अत्यंत प्रसन्नता के साथ डीएमके में शामिल हुआ हूं। ईपीएस तानाशाह की तरह व्यवहार कर रहे हैं और उन्होंने एआईएडीएमके को इस कदर मजबूत कर दिया है कि अब उसे जीतना असंभव है।

बोडी मेट्टू निर्वाचन क्षेत्र से बन सकते हैं उम्मीदवार

पीएम को अपने हर कूटनीतिक कदम के प्रभाव के प्रति रहना चाहिए संवेदनशील : मुफ्ती

» पीडीपी प्रमुख ने इजराइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू के साथ मेलजोल और गर्मजोशी भरे संवाद पर जताई आपत्ति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। महबूबा मुफ्ती ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ मेलजोल और गर्मजोशी भरे संवाद पर आपत्ति जताई। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि 1.4 अरब से अधिक लोगों के देश के प्रमुख होने के नाते प्रधानमंत्री को अपने हर कूटनीतिक कदम के संदेश और प्रभाव के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए।

उनका कहना था कि गाज़ा की मौजूदा स्थिति ने वैश्विक समुदाय का ध्यान अपनी ओर खींचा है और ऐसे समय में किसी भी तरह का सार्वजनिक प्रदर्शन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग संकेत दे सकता है। पीडीपी अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि गाज़ा संघर्ष के दौरान नागरिकों की मौतों के लिए नेतन्याहू को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय अपराधी तक करार दिया और दावा किया कि कुछ देशों में उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की संभावना हो सकती है। हालांकि उन्होंने किसी विशेष देश या कानूनी प्रक्रिया का उल्लेख नहीं किया, लेकिन उनका संकेत अंतरराष्ट्रीय कानून और मानवाधिकार के मुद्दों की ओर था। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री को ऐसे नेताओं को गले लगाते हुए नहीं देखा जाना चाहिए। मुफ्ती ने यह भी जोड़ा कि भारत ने ऐतिहासिक रूप से वैश्विक मामलों में नैतिक रुख अपनाया है और शांति व न्याय के पक्ष में अपनी स्पष्ट स्थिति रखी है।

भूपेंद्र सिंह हुड्डा को बड़ी राहत, सीबीआई को झटका

» हाईकोर्ट ने पंचकूला प्लॉट मामले में आरोप किए खारिज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंचकूला स्थित औद्योगिक प्लॉट पुन: आवंटन के दो दशक पुराने मामले में पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा को पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने बड़ी राहत दी है। कोर्ट ने सीबीआई की तरफ से लगाए गए आरोपों को खारिज करते हुए उन्हें क्लीनचिट दे दी। जस्टिस त्रिभुवन दहिया की एकल पीठ ने कहा कि अब तक उपलब्ध सामग्री से प्रथमदृष्टया में न तो आपराधिक साजिश का मामला बनता है और न ही भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत अपराध का आधार। इसके साथ ही हुड्डा व एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) के खिलाफ आरोप तय करने व हुड्डा की इस मामले में डिस्चार्ज एप्लीकेशन रद्द करने के सीबीआई कोर्ट के आदेश को भी रद्द कर दिया गया।

कोर्ट ने अपने आदेश में सीबीआई की भूमिका पर भी सवाल उठाए। कहा कि सीबीआई ने केवल हुड्डा को आरोपी बनाया अन्य अधिकारियों को नहीं, यह उसकी मंशा पर सवाल उठाता है। पुन: आवंटन का आदेश अकेले हुड्डा का नहीं था। प्राधिकरण ने सर्वसम्मति से उसे अनुमोदित किया था। इस फैसले को किसी सक्षम अदालत या प्राधिकरण ने निरस्त भी नहीं किया। जब तक पुन: आवंटन को विधिक रूप से अवैध घोषित नहीं किया जाता तब तक केवल जांच एजेंसी के आकलन पर उसे अपराध नहीं माना जा सकता है।

बिहार नहीं टूटेगा : शाहनवाज हुसैन

» बीजेपी नेता ने सीमांचल बंटवारे की अफवाह पर लगाया विराम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता शाहनवाज हुसैन ने कहा कि बिहार बड़ा राज्य है और बड़ा ही रहेगा। सीमांचल बंटवारे की बात को नकारा। बता दें हाल के दिनों में सीमांचल क्षेत्र और पश्चिम बंगाल के कुछ जिलों को मिलाकर अलग केंद्र शासित प्रदेश बनाने की चर्चा चल रही थी। शाहनवाज हुसैन ने इसे अफवाह बताया। उन्होंने कहा कि केंद्र या राज्य सरकार की ऐसी कोई योजना नहीं है। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के तीन दिवसीय बिहार दौरे का जिक्र किया। शाहनवाज हुसैन ने कहा कि गृह मंत्री का बिहार से गहरा लगाव है। उन्होंने बताया कि यह पहली बार है जब अमित शाह तीन दिनों तक किशनगंज जिले में प्रवास कर रहे हैं।

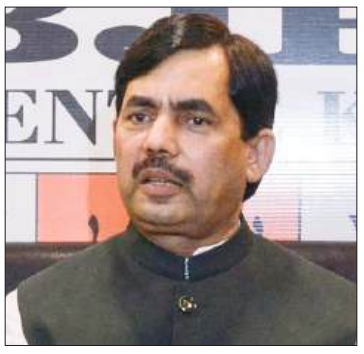

इसे उन्होंने सीमांचल की जनता के लिए गर्व की बात बताया। एआई समिट के दौरान कांग्रेस द्वारा उठाए गए सवालों पर उन्होंने आपत्ति जताई। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर इस तरह का व्यवहार सही नहीं है। उन्होंने विपक्ष पर देश में भ्रम फैलाने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निजी हमले करने का आरोप लगाया। राष्ट्रीय मुद्दों के साथ उन्होंने स्थानीय समस्या भी उठाई। उन्होंने महेशखूंट सहरसा मुख्य मार्ग की खराब स्थिति पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि राज्य के कई इलाकों में सड़कों का विकास हुआ है, लेकिन इस महत्वपूर्ण सड़क का निर्माण अब तक ठीक से नहीं हुआ है। उन्होंने राज्य सरकार से अपील की कि जल्द ठोस कदम उठाए जाएं ताकि लोगों को राहत मिल सके।

मैने प्रियंका गांधी से मीटिंग की : प्रशांत किशोर

पटना। प्रियंका गांधी से मुलाकात के बाद प्रशांत किशोर ने पहली बात मीडिया के सामने खुलकर बयान दिया है। चुनावी रणनीतिकार से राजनेता बने प्रशांत किशोर ने प्रियंका गांधी के साथ अपनी मुलाकात और जन सुराज पार्टी के कांग्रेस में विलय की खबरों पर चुप्पी तोड़ी है। मीडिया से बात करते हुए पीके ने प्रियंका गांधी से मुलाकात की बात स्वीकार की। तो ऐसे में अब एक बार फिर से प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी को लेकर कई तरह की चर्चाएं शुरु हो गई है, जिसपर खुद पीके ने अब बड़ा बयान दिया है।

शरद पवार की फिर तबीयत बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। शरद पवार के स्वास्थ्य में गिरावट के बाद उन्हें मुंबई के एक निजी अस्पताल में गहन चिकित्सा देखभाल में रखा गया है। पुणे में डिहाइड्रेशन के इलाज के बाद छुट्टी मिलते ही उन्हें बेहतर इलाज के लिए मुंबई स्थानांतरित किया गया। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शप) के अध्यक्ष को चिकित्सा देखभाल के लिए भर्ती कराया गया है। उनके एक करीबी सहयोगी ने यह जानकारी दी।

पवार (85) पिछले दिनो पुणे के रूबी हॉल क्लिनिक से छुट्टी दे दी गई थी। इसके कुछ ही घंटों बाद उन्हें मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती कराया गया। सहयोगी ने बताया कि पुणे से मुंबई पहुंचते ही पवार को ब्रीच कैंडी अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें गहन चिकित्सा देखभाल के लिए भर्ती कराया गया। पवार को शरीर में पानी की कमी होने से संबंधी समस्याओं के कारण रविवार को पुणे के रूबी हॉल क्लिनिक में भर्ती कराया गया था।

भारत की सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदें बरकरार

» जिम्बाब्वे को 72 रनों से हराया, भारत के नेट रन रेट में भी सुधार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। भारत ने जिम्बाब्वे के खिलाफ मैच में बल्ले और गेंद दोनों से दमदार प्रदर्शन किया जिससे सूर्यकुमार यादव की अगुआई वाली टीम ने सेमीफाइनल की ओर एक कदम बढ़ा लिए। भारत को अगर टी20 विश्व कप के अंतिम चार में पहुंचना है तो उसे सुपर आठ के आखिरी मैच में वेस्टइंडीज को हराना होगा। भारत की जीत से जिम्बाब्वे का सफर टी20 विश्व कप में समाप्त हो गया है। ग्रुप-1 से सेमीफाइनल की दौड़ में अब वेस्टइंडीज और भारत शामिल है।

दक्षिण अफ्रीका ने लगातार दो मैच जीतकर स्थिति मजबूत कर ली थी और भारत की जीत से वह सेमीफाइनल में पहुंचने में सफल रहा। अब अगर भारत अपना आखिरी मैच जीत जाए तो ग्रुप-1 से भारत और अफ्रीका सेमीफाइनल में पहुंच जाएंगे। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में

चार विकेट पर 256 रन बनाए। यह टी20 विश्व कप में भारत का सर्वोच्च स्कोर है। भारतीय टीम इस लक्ष्य का बचाव करने में सफल रही और जिम्बाब्वे की टीम को 72 रनों से हराया। जिम्बाब्वे के लिए ब्रायन बेनेट ने शानदार पारी खेली, लेकिन टीम 20 ओवर में छह विकेट पर 184 रन ही बना सकी। भारत ने जिम्बाब्वे के खिलाफ बड़ी जीत से नेट रन रेट में सुधार किया है, ग्रुप-1 में तीसरे स्थान पर है और उसका नेट रन रेट -0.100 है। वेस्टइंडीज की टीम दूसरे स्थान पर है और उसका नेट रन रेट +1.791 का है। भारत के लिए इस मैच में अभिषेक शर्मा और हार्दिक पांड्या ने अर्धशतक लगाए। वहीं, तिलक वर्मा ने नाबाद 44 रन बनाए। तिलक और हार्दिक ने आखिरी पांच ओवर में 80 रन जुटाए।

क्रिकेटर रिंकू सिंह के पिता का निधन

नोएडा। रिंकू सिंह पर दुखों का पहाड़ टूट गया है। रिंकू सिंह के पिता खानचंद सिंह का लंबी बीमारी के बाद देर रात निधन हो गया है। उन्होंने ग्रेटर नोएडा के यथार्थ अस्पताल में अंतिम सांस ली। रिंकू सिंह के पिता खानचंद सिंह स्टेज-4 लिवर कैंसर से जूझ रहे थे। वह करीब तीन दिन से अस्पताल में भर्ती थे। रिंकू सिंह वर्ल्ड कप के बीच ही अपने पिता से मिलने आए थे। पिता के निधन की खबर के बाद वो तुरंत वापस लौट रहे हैं। रिंकू टूर्नामेंट में आगे टीम इंडिया का हिस्सा बनेंगे इसको लेकर अभी कुछ कहा नहीं जा सकता है। रिंकू सिंह के पिता खानचंद उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में एक गैस एजेंसी में काम करते थे। आर्थिक तंगी के बावजूद उन्होंने अपने बेटे रिंकू के क्रिकेटर बनने के सपने को पूरा करने में सहयोग किया। रिंकू की कामयाबी के बाद भी उन्होंने यह काम नहीं छोड़ा। रिंकू ने खुद शुरुआत में सिलिंडर वितरण के काम में पिता का हाथ बंटाया और गरीबी से लड़ते हुए क्रिकेट के मैदान पर अपनी जगह बनाई।

राहुल व प्रियंका ने वायनाड भूस्खलन पीड़ितों को लगाया मरहम

100 नए घर बनवाकर देगी कांग्रेस पीड़ितों से बोले कांग्रेस नेता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वायनाड। वायनाड भूस्खलन पीड़ितों को कांग्रेस ने मरहम लगाया। एक बड़ी पहल के तहत राहुल गांधी ने 100 घरों का शिलान्यास किया और प्रियंका गांधी ने भी पीड़ितों को समर्थन का आश्वासन दिया। इस राहत योजना में प्रभावित दुकानदारों को 5-5 लाख रुपये की आर्थिक मदद भी शामिल है, जिसे कांग्रेस की एक महत्वपूर्ण मानवीय कार्रवाई के रूप में देखा जा रहा है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को साल 2024 में आए भीषण भूस्खलन के पीड़ितों के लिए एक बड़ी राहत योजना की शुरुआत की। उन्होंने पार्टी की ओर से बनाए जाने वाले 100 घरों का शिलान्यास किया। कांग्रेस द्वारा बनाए जा रहे ये घर 1,100 स्क्वायर फीट के होंगे, जिनमें से हर घर के लिए 8 सेंट जमीन दी गई है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने प्रभावित परिवारों को भरोसा दिलाया कि उनका पूरा परिवार उन लोगों के साथ मजबूती से खड़ा है जिन्होंने इस त्रासदी में अपना सब कुछ खो दिया है।

प्रियंका गांधी का भी भावनात्मक संदेश

प्रियंका गांधी वाड्रा ने भी पीड़ितों का दुख साझा करते हुए कहा कि उन्होंने उन लोगों की मुश्किलें देखी हैं जिन्होंने अपने परिजनों और खेतों को खो दिया। उन्होंने बताया कि कांग्रेस के सभी सांसदों ने गृह मंत्री से मिलकर इसे राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की मांग की थी और प्रधानमंत्री को भी पत्र लिखा था। प्रियंका ने कहा कि हादसे के वक्त वह सांसद नहीं थीं, लेकिन अब वह इस क्षेत्र के लोगों के लिए एक बेटी और बहन की तरह हैं। उन्होंने इस बात की भी खुशी जताई कि सभी राजनीतिक दलों ने पुनर्वास के काम में मदद की है।

नेता प्रतिपक्ष ने पीड़ितों के हौसले की तारीफ की

राहुल गांधी ने पीड़ितों की हिम्मत की सराहना करते हुए कहा, आपने बहुत कुछ खोया है, लेकिन अपना हौसला और दूसरों के प्रति हमदर्दी नहीं खोई। उन्होंने घर बनाने की प्रक्रिया में हुई देरी का भी जिक्र किया और बताया कि जमीन की परमिशन और अन्य कागजी कार्रवाई के कारण समय लगा, लेकिन अब यह काम जल्द पूरा होगा। उन्होंने इस पहल को पीड़ितों के लिए प्यार और साथ का एक संदेश बताया।

एनसीईआरटी मामले पर कांग्रेस ने पीएम मोदी पर साधा निशाना

पीएम के लिए एनसीईआरटी का असली फुल फॉर्म है नागपुर कम्युनल इकोसिस्टम फॉर रिराइटिंग ऑफ टेक्स्टबुक्स : जयराम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एनसीईआरटी की कक्षा आठवीं की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक को लेकर जारी विवाद के बीच कांग्रेस ने पीएम मोदी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने स्वयं पाठ्यपुस्तकों के पुनर्लेखन के लिए नागपुर सांप्रदायिक पारिस्थितिकी तंत्र का मार्गदर्शन और आकार दिया है (नागपुर कम्युनल इकोसिस्टम फॉर रिराइटिंग ऑफ टेक्स्टबुक्स), जो वास्तविक एनसीईआरटी है। पार्टी ने सुप्रीम कोर्ट से इस पूरे मामले की विस्तृत जांच कराने की मांग भी की।

कांग्रेस महासचिव (संचार) जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि पिछले एक दशक में पाठ्यपुस्तकों में वैचारिक बदलाव किए गए हैं और इन्हें ध्रुवीकरण व राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का माध्यम बनाया गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने ही ऐसे शैक्षणिक तंत्र को दिशा दी है, जिसने पाठ्यपुस्तकों के पुनर्लेखन को आकार दिया। कांग्रेस का यह बयान ऐसे समय आया है जब सुप्रीम कोर्ट ने एनसीईआरटी की कक्षा आठवीं की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक के आगे के प्रकाशन, पुनर्मुद्रण और डिजिटल प्रसार पर पूर्ण रोक लगा दी है। शीर्ष अदालत ने पुस्तक में न्यायपालिका पर आपत्तिजनक सामग्री होने पर कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि इससे संस्थान की गरिमा प्रभावित होती है। सुप्रीम कोर्ट ने मामले को गंभीर मानते हुए पुस्तक की सभी भौतिक और डिजिटल प्रतियों को तत्काल जब्त कर सार्वजनिक पहुंच से हटाने के निर्देश दिए हैं। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने एनसीईआरटी निदेशक और स्कूली शिक्षा विभाग के सचिव को कारण बताओ नोटिस जारी कर पूछा है कि आपत्तिजनक अध्याय शामिल करने के लिए जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई क्यों न की जाए। वहीं, केंद्र सरकार ने भी पुस्तक में विवादित अंश शामिल किए जाने पर चिंता जताई है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि जिम्मेदारी तय की जाएगी और मसौदा तैयार करने में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उधर, एनसीईआरटी ने शीर्ष अदालत की सख्त टिप्पणियों के बाद पुस्तक को अपनी वेबसाइट से हटा लिया है, अनुचित सामग्री के लिए खेद जताया है और संबंधित प्राधिकरणों से परामर्श के बाद इसे दोबारा संशोधित करने की बात कही है। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी चेतावनी दी है कि उसके आदेश की अवहेलना करते हुए किसी भी माध्यम से समान सामग्री प्रसारित करने की कोशिश को गंभीर उल्लंघन माना जाएगा।

जेएनयू छात्र संघ का मार्च हुआ उग्र

» पूर्व और वर्तमान अध्यक्ष सहित 14 गिरफ्तार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली का जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) एक बार फिर अखाड़े में तब्दील हो गया है। छात्र संघ द्वारा आयोजित लॉन्ग मार्च के दौरान छात्रों और दिल्ली पुलिस के बीच हिंसक झड़प हुई।

इस मामले में पुलिस ने कड़ा रुख अपनाते हुए वर्तमान अध्यक्ष अदिति मिश्रा और पूर्व अध्यक्ष नीतीश कुमार समेत 14 लोगों को गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, गिरफ्तार किए गए लोगों में जाने-माने स्टूडेंट लीडर, जेएनयूएसयू के पूर्व प्रेसिडेंट नीतीश कुमार, जेएनयूएसयू प्रेसिडेंट अदिति मिश्रा, वाइस प्रेसिडेंट गोपिका बाबू और जॉइंट सेक्रेटरी दानिश अली शामिल हैं। वसंत कुंज नॉर्थ पुलिस स्टेशन में एफआई दर्ज की गई है और जांच चल रही है।

चंडीगढ़ में स्कूलों को बम से उड़ाने की आई मेल

» लिखा-अगले दो दिन में चंडीगढ़ में ब्लास्ट होंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। शुक्र वार को विवेक हाई स्कूल और गुरुकुल भवन विद्यालय और अन्य कई प्राइवेट और सरकारी स्कूलों को ईमेल के माध्यम से बम से उड़ाने की धमकी भेजी गई। सूचना मिलते ही स्कूल प्रशासन ने तुरंत पुलिस को अवगत कराया। स्कूलों को मिली धमकी में लिखा है कि अगले दो दिन में पूरे चंडीगढ़ में बम ब्लास्ट होंगे।

एहतियातन बच्चों को घर भेजा गया है। मेल में पंजाब सेक्रेटरिएट को भी उड़ाने की धमकी दी गई है। चंडीगढ़ में धमकियां मिलने का सिलसिला लगातार जारी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पंजाब दौरे से पहले भी चंडीगढ़ के कई स्कूलों को धमकी भरे मेल आए थे। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी, बम निरोधक दस्ता और डॉग स्क्वॉड की टीम मौके पर पहुंची। एहतियातन स्कूलों को खाली करवा लिया गया और छात्रों को सुरक्षित स्थान पर भेजा गया। इसके बाद

पूरे परिसर में सघन तलाशी अभियान चलाया गया। कक्षाओं, कार्यालयों, स्टोर रूम और अन्य स्थानों की बारीकी से जांच की गई। प्रारंभिक जांच में किसी प्रकार की संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई है। हालांकि सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस की जांच देर शाम तक जारी रही। स्कूल के आसपास के क्षेत्र में भी निगरानी बढ़ा दी गई है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, धमकी भरा ईमेल किस आईडी से भेजा गया, इसकी जांच की जा रही है। साइबर सेल की टीम तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर ईमेल भेजने वाले की पहचान में जुटी है। अधिकारियों ने बताया कि इससे पहले भी शहर के कुछ शिक्षण संस्थानों को इस तरह के ईमेल मिल चुके हैं, जिनमें कोई विस्फोटक नहीं मिला था।

प्रशासन ने अभिभावकों से अपील की है कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें। फिलहाल स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में बताई जा रही है। इस तरह से बार-बार स्कूलों और अन्य सरकारी संस्थान में बम की धमकी से शहर वासियों की चिंता बढ़ गई है।

एसआईआर मामले में सरकार व चुनाव आयोग पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

» शीर्ष कोर्ट बोली- कोई नहीं कर सकता हमारे आदेश का उल्लंघन, बंगाल एसआईआर पर हुई सुनवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) मामले की सुनवाई हुई। इस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी करते हुए कहा कि न तो चुनाव आयोग और न ही राज्य सरकार हमारे आदेशों का उल्लंघन करेगी।

सुप्रीम कोर्ट ने ये भी कहा कि हमने स्पष्ट कर दिया है कि किन दस्तावेजों की जांच की जानी है। हमारे आदेश बिलकुल स्पष्ट हैं। सुप्रीम कोर्ट में पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से बताया गया कि चुनाव आयोग ने राज्य में मतदाता सूचियों के एसआईआर में तैनात न्यायिक अधिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल जारी किया था। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर टिप्पणी की कि वह अपने न्यायिक अधिकारियों को जानता है और वे किसी भी चीज से प्रभावित नहीं होंगे। पश्चिम बंगाल की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिबल ने मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ के सामने इस मामले का उल्लेख किया। उन्होंने पीठ से कहा, चुनाव आयोग ने पीठ पीछे न्यायिक अधिकारियों को निर्देश जारी किए हैं। एक प्रशिक्षण मॉड्यूल जारी किया है जिसमें कहा गया है कि उन्हें क्या स्वीकार करना चाहिए और क्या नहीं। इस पर मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि राज्य में इस प्रक्रिया के लिए तैनात न्यायिक अधिकारी इस संबंध में फैसले लेंगे।

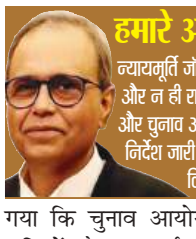

हमारे आदेशों से आगे कोई नहीं जाएगा : जॉयमाल्या बागची

न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची ने कहा कि हमारे आदेश बिलकुल स्पष्ट हैं। पीठ ने कहा कि न तो चुनाव आयोग और न ही राज्य सरकार इस मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा पारित आदेशों से आगे जाएगी। पश्चिम बंगाल सरकार और चुनाव आयोग के बीच चल रहे गतिरोध से निराश होकर शीर्ष अदालत ने 20 फरवरी को एक असाधारण निर्देश जारी किया। इसमें राज्य में विवादित मतदाता सूचियों की एसआईआर में चुनाव आयोग की सहायता के लिए सेवारत और पूर्व जिला न्यायाधीशों को तैनात करने का निर्देश दिया गया।

न्यायपालिका पर अभद्र टिप्पणी करना पड़ेगा भारी

प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने सोशल मीडिया पर न्यायपालिका के खिलाफ अपशब्दों का प्रयोग करने वालों को चेतावनी देते हुए कहा कि ऐसी टिप्पणियां निष्पक्ष आलोचना के दायरे से बाहर हैं और ऐसा करने पर अवमानना के तहत सख्त कार्रवाई की जा सकती है। न्यायमूर्ति जे जे मुनीर और न्यायमूर्ति प्रमोद कुमार श्रीवास्तव की खंडपीठ ने कहा कि यदि यह अदालत ऐसी पोस्ट को अवमानना के क्षेत्राधिकार में संज्ञान में लेती है तो उस पोस्ट पर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।अदालत ने कहा, ''हम लोगों को भविष्य में सावधान रहने की याद जरूर दिलाना चाहेंगे क्योंकि सोशल मीडिया पर कहे गए ऐसे शब्द जो स्पष्ट रूप से अवज्ञाकारी हों, जब भी अवमानना के क्षेत्राधिकार में संज्ञान में लिये जाते हैं, अवमानना करने वाले को कानून के तहत दंड का सामना करना पड़ सकता है।'' अदालत ने कहा कि सोशल मीडिया पर इस प्रकार अपशब्द कहना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा लांघता है। अदालत ने बस्ती की एक जिला अदालत में अधिवक्ता हरि नारायण पांडेय के आचरण के संबंध में अदालतों की अवमानना अधिनियम 1971 की धारा 15 के तहत एक आपराधिक अवमानना मामले के संदर्भ में यह टिप्पणी की।अदालत ने स्पष्ट रूप से कहा कि सोशल मीडिया पर उच्च अदालतों को लेकर कहे गए अपशब्द किसी भी तरह से उचित टिप्पणी या निर्णय की आलोचना के दायरे में नहीं आते। अदालत ने इस बात पर गौर किया कि निंदा करने वाला व्यक्ति ने अपने शब्दों को न्यायोचित नहीं ठहराया और उसने स्वीकार किया कि उस दिन जब यह घटना हुई, उस समय वह अत्यंत व्यथित था। अधिवक्ता के खिलाफ मुकदमा समाप्त करते हुए अदालत ने 24 फरवरी को अपने निर्णय में कहा कि अधिवक्ता काफी लंबे समय से वकालत के पेशे में है और उसने बिना किसी शर्त के माफी मांग ली है जिसे अधीनस्थ अदालत के न्यायाधीश ने स्वीकार कर लिया है।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**